বৰ্ষাৰণ্যম্

वर्षारण्यम्

বৰ্ষাৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠান
वर्षा वन अनुसंधान संस्थान

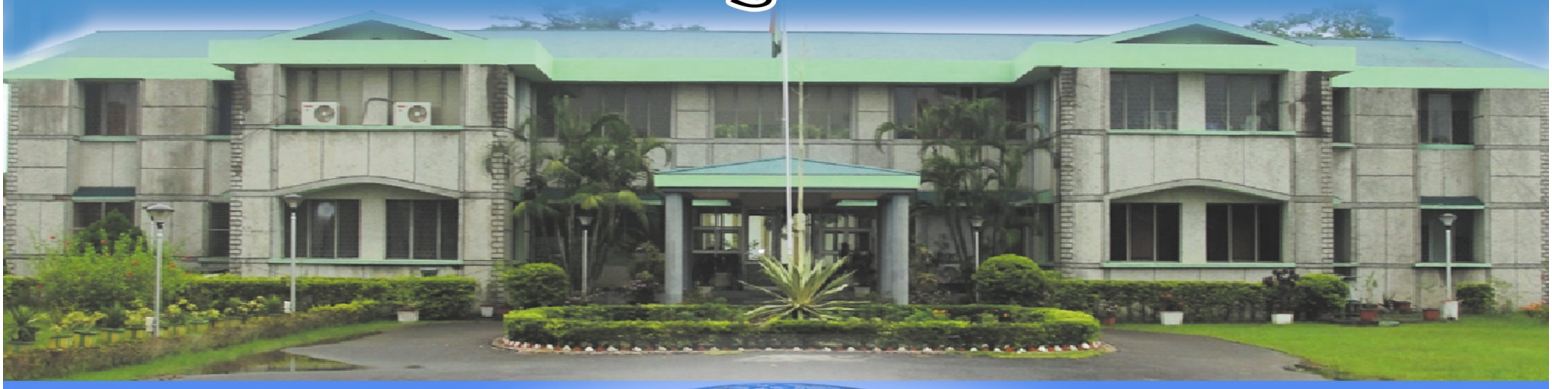

ই-আলোচনী
সংখ্যা-২

ई-पत्रिका
संख्या-२

ভাৰতীয় বন গৱেষণা আৰু শিক্ষা পৰিষদ
পৰিৱেশ,বন আৰু জলবায়ু পৰিবৰ্তন মন্ত্ৰালয়,ভাৰত চৰকাৰৰ অধীনস্থ এক স্বায়ত্ত পৰিষদ
পো.ব.সংখ্যা ১৩৬,যোৰহাট-৭৮৫০০১,অসম

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीनस्थ एक स्वायत्त परिषद्
पोस्ट बॉक्स सं. १३६,जोरहाट –७८५००१, असम

वर्षा অৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠানৰ ই-আলোচনী

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान की ई-पत्रिका

संपादक
श्री शंकर शर्मा

संपादना सहयोग मण्डल
श्री भूबन कछारी
श्री असीम चेतिया

संपदना कक्ष
हिन्दी प्राकोष्ठ

आवरण एवं साज-सज्जा
श्री भूबन कछारी

आवरण: वैश्विक जलवायु परिवर्तन

हिन्दी अधिकारी
डॉ. विपिन प्रकाश

संरक्षक
डॉ. आर.एस.सी. जयराज, भा.व.से.
निदेशक
वर्षा वन अनुसंधान संस्थान
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद
जोरहाट - 785001, असम

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अनिवार्यतः वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट के नहीं हैं।

বিষয়-সূচী | विषय-सूची

निदेशक के संदेश 3
গৱেষণা সমন্বয়কৰ শুভেচ্ছাবাণী..... 4
सचिव, नराकास, जोरहाट का संदेश..... 5
संपादकीय..... 6
हिन्दी अधिकारी के दृष्टिकोण से..... 7
পাঠকৰ দু-আষাৰ / पाठकों के दो शब्द 8
मेरे कुत्ते..... 9
सैनिक है उनका नाम (कविता)..... 9
जतिंगा- पक्षियों का रहस्य..... 10
शांति (कविता)..... 12
हिन्दी प्रकोष्ठ की गतिविधियां 12
हिन्दी सप्ताह समारोह - 2015 की कुछ झलकियाँ 16
भारत की अखण्डता और राजभाषा 17
राजभाषा अधिनियम, 1963 18
প্ৰদূষণ মুক্ত ঘৰুৱা পৰিৱেশ 22
মই এটা গল্প লিখিম 23
চাকৰি জীৱনৰ অভিজ্ঞতা 24
লাজুকী বান্দৰ 26
বেলি মাৰ গ'ল 27
বিশেষভাৱে সক্ষম শিশুসকলৰ প্ৰতি সমাজৰ দায়িত্ব 29
প্ৰাচীন গ্ৰীক সভ্যতাৰ এক সুন্দৰ নিদৰ্শন-এক্ৰ'পলিচৰ পাৰ্থেনন..... 31
গীটাৰ / পথী (কবিতা)..... 32
স্বচ্ছতা / অনুভৱ

संदेश

डॉ. आर. एस. सी. जयराज, भा.व.से.
निदेशक, तथा
अध्यक्ष
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

'वर्षारण्यम' पत्रिका ने सितंबर, 2015 में इसके विमोचन से एक वर्ष की अवधि सम्पूर्ण की है। संस्थान के कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों ने इस पत्रिका को प्रकाशित करने में जो सहयोग दिया वह प्रशंसनीय है। परंतु, कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों से सहभागिता ज्यादा वांछनीय है, विशेष रूप से बच्चों से। इस ई-पत्रिका के प्रकाशन के पीछे केवल हिन्दी और असमीया को प्रोत्साहित नहीं करना है, बल्कि समस्त वर्षा वन अनुसंधान संस्थान परिवार के सदस्यों की सृजनशीलता को आगे लाना है। आईए, हम बच्चों की सृजनशीलता से पत्रिका के आगामी संख्याओं को और अधिक रोचक बनाएँ।

मैं, डॉ. विपिन प्रकाश, हिन्दी अधिकारी और श्री शंकर शर्मा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक को पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए उनके प्रयास को बधाई देता हूँ।

(डॉ. आर. एस. सी. जयराज)
निदेशक

শুভেচ্ছাবাণী

ড° ৰাজীৰ কুমাৰ বৰা
বৈজ্ঞানিক-এফ তথা সমূহ সমন্বয়ক (গৱেষণা)

'বৰ্ষা অৰণ্য গৱেষণা প্রতিষ্ঠানে' ৰাষ্ট্রভাষা হিন্দীৰ প্রচাৰৰ বাবে বিভিন্ন ধৰণৰ প্রচেষ্টা হাতত লৈ আহিছে। হিন্দীক ৰাষ্ট্রভাষা হিচাপে স্বীকৃতি দিয়া হ'ল যদিও সকলো কার্য্যালয়তে এই ভাষাৰ যিধৰণে প্রচলন আৰু ব্যৱহাৰ হ'ব লাগিছিল, তেনেধৰণৰে হোৱা দেখা পোৱা নাই। ৰাষ্ট্রভাষাৰ নিয়ম অনুযায়ী হিন্দী ভাষাৰ প্রচলনৰ প্রসাৰৰ ওপৰত অধিক গুৰুত্ব দিয়া উচিত।

এই ক্ষেত্রত আমাৰ প্রতিষ্ঠানৰ তৰফৰ পৰা হিন্দী ভাষাক অধিক জনপ্রিয় আৰু অধিক প্রসাৰৰ বাবে এখন দ্বিভাষিক ই-আলোচনী প্রকাশ কৰিবলৈ যি পদক্ষেপ হাতত লৈছে সেইয়া সঁচাকৈয়ে প্রশংসনীয়।

এই আলোচনীখনত অসমীয়া ভাষাৰ লগতে হিন্দী ভাষাত প্রৱন্ধ, কবিতা, গৱেষণা সম্বন্ধীয় বিষয়ত বিভিন্ন লেখনি লিখিবলৈ কার্য্যালয়ৰ সকলো কর্মচাৰীক উৎসাহ দিয়া হৈছে।

মই এই আলোচনীখনৰ দীর্ঘায়ু কামনা কৰিছোঁ।

ৰাজীৰ কুমাৰ বৰা

(ড° ৰাজীৰ কুমাৰ বৰা)
সমূহ সমন্বয়ক (গৱেষণা)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोरहाट

TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE, JORHAT

(established by Govt. of India, Ministry of Home, under the Chairmanship of Director, NEIST : all Central Govt offices of Jorhat are member)

उत्तर-पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान, जोरहाट, आसाम : भारत
NORTH-EAST INSTITUTE OF SCIENCE AND TECHNOLOGY] JORHAT,ASSAM:INDIA
Ph: 0376+ 2370012/2372523(Chairman) EPABX: 2370117*2245 (TOLIC Office)
Gram: RESEARCH Fax : 0376-2370011/ 2370115
E mail : director@rrljorhat.res.in / kumar_a@rrljorhat. res.in
hindicell@rrljorhat.res.in Website : www.neist.res.in

सचिव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोरहाट

संदेश

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट से प्रकाशित ई-पत्रिका **'वर्षारण्यम'** राजभाषा एवं कार्यालय की सह भाषा अर्थात असमियाँ, हिंदी एवं अँग्रेजी का सुंदर समागम प्रस्तुत करता है । तीनों भाषाओं की रचनाएँ पत्रिका में चार चांद लगा रहे हैं । यहाँ के किसी भाषा-भाषी के लिए सहज पठनीय प्रतीत होता है । पत्रिका का गेट-अप एवं संपादन की सशक्तता इसे आकर्षक बनाता है । 'वर्षारण्यम' में पूर्वोत्तर भारत के सप्तभागिनी प्रदेशों की खुशबू आती है ।

इस प्रकार के पत्रिकाओं के प्रकाशन से राजभाषा हिंदी के विकास में महत्त्वपूर्ण सहयोग मिलता है । पत्रिका निर्माण से जुड़े सभी व्यक्तियों को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

आशा है 'वर्षारण्यम' का निर्माण एवं रचनाकारों की समभागिता सतत जारी रहेगा । आप सभी को मेरी ओर से एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोरहाट के समस्त सदस्य कार्यालयों की ओर से से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

आपका

अजय कुमार

संपादक के कलम से...

शंकर शर्मा
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

सर्वप्रथम, सभी को हिन्दी प्रकोष्ठ की ओर से हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। हमारें लिए सौभाग्य की बात है कि एक वर्ष के अंतराल के बाद आपके समक्ष उपस्थित होने का पुनः अवसर प्राप्त हुआ है। संस्थान के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों ने हमारें प्रथम प्रयास को अपनाया यह जानकार हमें खुशी हुई। अगस्त २००९ को मेरी नियुक्ति इस संस्थान में हिन्दी अनुवादक के रूप में हुई थी। शून्य से शनै: शनै: राजभाषा हिन्दी को संस्थान के समस्त परिवार तक पहुंचाने का जो गुरु दायित्व आरंभ से मुझे मिला है उसे शत प्रतिशत निष्ठा से निभाने का मैं वचनबद्ध हूँ। राजभाषा हिन्दी का मूलमंत्र है हिन्दी के साथ-साथ सभी भाषाओं का विकास। हिन्दी भाषा को किसी अन्य भाषा के ऊपर वर्चस्व नहीं दिखाना है अपितु सहभगिनी की तरह एक साथ प्रवाहित होना है। परंतु कुछ हिन्दी भाषी यह भूल जाते है कि भाषा किसी पर थोपी नहीं जा सकती है। आशा है कि भगवान उन्हें सुमति देंगे। हिन्दी और असमीया, दोनों भगिनियों के प्रचार-प्रसार के मूलमंत्र को लक्ष्य के रूप में रखते हुए श्री भूबन कछारी, श्री असीम चेतिया और मेरे मन में एक हिन्दी-असमीया द्विभाषी पत्रिका प्रकाशित करने का बीज अंकुरित हुआ। आज वह बीज एक पौधा बन आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है कि 'वर्षारण्यम' की दूसरी प्रति को भी आप सभी का पूर्ण सहयोग और प्यार मिलेगा।

'वर्षारण्यम' के प्रथम अंक में हमने पाया कि हमारें संस्थान में ऐसे बहुत कार्मिक हैं जिनमें सृजनशीलता भरी पड़ी हैं। अपने दैनिक कार्यों और आजीविका के पीछे भागते हुये लोगों के लिए यह पत्रिका एक सशक्त माध्यम बन के आगे आया है। इस पत्रिका में ज्ञानवर्धक लेखों, सारगर्भित रचनाओं, रोचक कहानियों, कविताओं आदि के प्रकाशन से जो सृजनशीलता की धारा बही है उसमें गोते लगाने के लिए मैं सबका आह्वान करता हूँ। मैं विशेषकर बच्चों को कुछ कहना चाहता हूँ जिनमें कुछ कर दिखाने का उमंग हैं, आप अपनी कल्पना रूपी पंखों को खुले आशमान की असीम उड़ान पर छोड़ दें।

पुनः राजभाषा हिन्दी के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए यह बात स्पष्ट करना है कि हिन्दी के विकास में हिंदीतर या अहिंदी भाषियों का बहुत बड़ा योगदान हैं। १४ सितंबर, १९४९ को जब हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जा रहा था तो उस नियम पर हस्ताक्षर करने वाले हिंदीतर भाषियों की संख्या कम नहीं थी। हिन्दी आज भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृत है, जिसका श्रेय: हिंदीतर भाषियों को जाता है। हम चाहते हैं कि नियमित कार्यशाला, संगोष्ठी, व्याख्यान, मासिक प्रगति प्रतिवेदन के अतिरिक्त हिन्दीतर भाषियों को हिन्दी के प्रचार-प्रसार में प्रोत्साहित किया जाए, तो ही हिन्दी का विकास संभव है।

अंत में, मैं पत्रिका के सभी लेखकों को उनके रोचक, मौलिक और मननशील रचनाओं के लिए धन्यवाद देता हूँ जिनके बिना यह कार्य असंभव है। मैं उनको भी धन्यवाद देना चाहता हूँ जो पत्रिका के आगामी अंकों में अपनी रचनाएँ प्रेषित करते हुए हमें कृतार्थ करने का संकल्प ले रहे हैं। आशा है कि पाठक हमें अपने बहुमूल्य सुझावों से मार्गदर्शन देते रहेंगे।

धन्यवाद।

পাঠকৰ দু-আষাৰ / पाठकों के दो शब्द

নিবেদিতা বৰুৱা দত্ত
গৱেষণা সহায়ক

শংকৰ, ভুৱনদা আৰু অসীমৰ প্ৰচেষ্টাত প্ৰাণ লৈ উঠা এই ই-আলোচনী "বৰ্ষাৰণ্যম্" হৈছে আমাৰ প্ৰতিষ্ঠানৰ সাহিত্য জগতৰ ক্ষেত্ৰত এক নতুন দিগন্ত। কৰ্মময় জীৱন আৰু ঘৰুৱা পৰিৱেশত ক্ৰমান্বয়ে যতি পৰি যোৱা আমাৰ সকলোৰে সৃষ্টিশীল মনটোক সজীৱ কৰি তোলাত এই ই-আলোচনীখনে যথেষ্ট জ্ঞান আৰু আমোদ দিবলৈ সক্ষম হৈছে। ভিন্ন দিশত ভিন্ন মৌলিক ৰচনাৰে সমৃদ্ধ এই ই-আলোচনীখনিৰ দ্বিতীয় সংস্কৰটো যাতে অতি শীঘ্ৰেই প্ৰকাশিত হয় তাৰেই কামনাৰে।

"বৰ্ষাৰণ্যম্" পঢ়ি আপ্লুত হ'লো। "বৰ্ষাৰণ্যম্" আলোচনী খনৰ জন্মৰ নেপথ্যত থকা ত্ৰিমূৰ্তি শংকৰ শৰ্মা, ভুবন কছাৰী আৰু অসীম চেতিয়াৰ আশাশুধীয়া প্ৰচেষ্টাৰ আন্তৰিক শলাগ ল'লো। আলোচনীখনৰ প্ৰচ্ছদ বৰ সুন্দৰকৈ সজাই তুলিছে। নিৱন্ধ, কবিতা আৰু বিভিন্ন মননশীল লিখনিৰ সম্ভাৰেৰে আলোচনীখন অতি মনোগ্ৰাহী হৈছে।
আলোচনীখনৰ উত্তৰোত্তৰ কামনা কৰিলোঁ আৰু আশা কৰিলোঁ এই ত্ৰিমূৰ্তিৰ প্ৰচেষ্টাত অতি শীঘ্ৰে পৰৱৰ্তী সংস্কৰণ পঢ়িবলৈ পাম।

শ্ৰীমতী চুমকী ডেকা
সহধৰ্মিণী: শ্ৰী অৰবিন্দ ডেকা

শ্ৰীমতী আদৃতা বৰকটকী
অধ্যাপিকা: জ্ঞানপীঠ অকাদেমী, টিযক
অৰ্ধাংগিনী: শ্ৰী শংকৰ শৰ্মা

"वर्षारण्यम" पत्रिका के सम्पादन से जुड़े सभी व्यक्तियों को मैं हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ। इस ई-पत्रिका को वेबसाइट में अपलोड करने के अतिरिक्त यदि प्रकाशित किया जाये तो और भी अधिक सराहनीय होगा। क्योंकि आज के इस सूचना प्रौद्योगिकी के युग में भी पुस्तक का प्रभाव ज्यादा पड़ता है। साथ ही बहुत लोगों को इंटरनेट का ज्ञान नहीं होता है। मेरी आशा है कि "वर्षारण्यमà" की मुद्रित प्रति भविष्य में हमे पढ़ने को मिलेगी।

प्रथम अंक में प्रकाशित श्री भूबन कछारी जी का लेख "**आजिৰ সমাজত যোগৰ প্ৰাসংগিকতা** " पढ़ा जो बहुत ही समयोपयोगी है। योग का महत्व आज पूरे विश्व में फैल चुका है। योग ही "वसुधैव कुटुम्बकम" की धारणा को सार्थक बनायेगा। अन्य सभी लेख बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक है। मैं आशा करती हूँ कि जल्द ही पत्रिका कि दूसरी प्रति प्रकाशित होगी।

हिन्दी विभाग

मेरे कुत्ते

मेरे दो कुत्ते हैं। उनके नाम ब्रूतस और लक्की है। वह दोनों बहुत प्यारे है। वे बस एक महीने के थें जब मेरे पापा उन्हें घर लेके आये थें। बरूतस का रंग काला और भूरा है और वह जर्मन शेफर्ड परिवार से है। लक्की का रंग काला, भूरा और सफेद है और वह जर्मन शेफर्ड और नागा कुत्ते के संकर परिवार से है। ब्रूतस की खास चींज उसके सुंदर आँखे है और लक्की की सुंदर पूँछ है। जब मैंने उनको पहली बार देखा तो मैं खुशी से उछल पड़ी।। वो दोनों मुझे बहुत पसंद करते हैं और वो दोनों हमारी हर बात सुनते हैं। दोनों कुत्ते बहुत समझदार और जिम्मदार हैं। मैं जब स्कूल से वापस आती हूँ तो, दोनों मुझे देखकर उछल पड़ते हैं। उनके आने से जैसे जीवन में रौनक आ गई। मैं उन्हें बहुत प्यार करती हूँ।

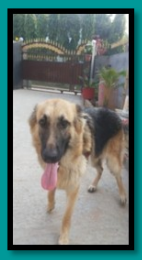

ब्रूटस

लक्की

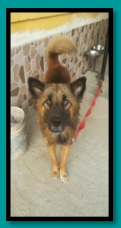

स्वास्तिका

कक्षा V, आर्मी पब्लिक स्कूल, गुवाहाटी
सुपुत्री: श्रीमती बेबीजा कंगाबम,
अनुसंधान सहायक

सैनिक है उनका नाम.....

देश की रक्षा करते है वह हर दम
मिला कदम से कदम।
वीर है वह, है वह देश का शान
सैनिक है उनका नाम, वह है बहुत महान।।

थरथराती ठंड हो या तेज तर्रार धूप
डरा नहीं सकते उनको मौसम का किसी भी रूप।
बारिश हो या हवा का तूफान
सैनिक है उनका नाम, वह है बहुत महान॥

परवाह नहीं उनको अपनी जान
सदा ऊंचा रखते है देश का मान।
सीने पर लेते है दुश्मनों का हर वाण
सैनिक है उनका नाम, वह है बहुत महान॥

परिवार से दूर, कर जाते है अपना काम
नहीं लेते वह एक पल का आराम।
देश के लिए करते है अपना जीवन दान
सैनिक है उनका नाम, वह है बहुत महान॥

देवाक्षी कश्यप
स्नातक प्रथम वर्ष
काजीरंगा विश्वविद्यालय

जतिंगा - पक्षियों का रहस्य

'ये भगवान के डाकिये हैं, जो एक महादेश से दूसरे
महादेश जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं, मगर उनकी लायी चिठ्ठियाँ
पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ बाँचते है।'
-रामधारी सिहं 'दिनकर'

यूँ तो आकाश का विस्तार साधारण मानुष्य के लिए अकल्पनीय है परंतु इस नभ में विचरने वाले पक्षियों को इसका भली भांति आभास है। असीमित नभ में पक्षी जिस तरह स्वच्छन्दता से विचरते है यह वर्णन कदाचित रोचक है। यद्यपि मनुष्य के मन को चंचल अति चंचल कहा गया है, परंतु यह काल्पनिक चंचलता, पक्षियों की वास्तविक चंचलता से भिन्न है क्योंकि हम सिर्फ कल्पना करते है और पक्षी उसी नभ में गोते लगाते हैं। प्रजनन व अन्य कारणों से प्रवास करते हुए पक्षी अपनी उड़ान से इस धरा को न जाने कितनी बार नापते हैं, परंतु एक स्थान है जो कि पक्षियों का रहस्य है- वह स्थान है जतिंगा।

जतिंगा असम के डिमा हसाओ जिले मे है और गुवाहाटी से लगभग 330 किमी की दूरी पर हाफलोंग, लमडिंग एवं सिलचर पर्वतमालाओं के मध्य स्थित है। एक निश्चित 1.5 किमी एवं 200 मीटर चौड़े भूभाग में पक्षियों को आकर मरते हुए देखना अविश्वसनीय है। इसी कारण से जतिंगा को पक्षियों की आत्महत्या की घाटी कहा जाता है। जतिंगा इसी नाम से सारी दुनिया के पर्यटकों में विख्यात व लोकप्रिय है। दुनिया भर से पर्यटक यहाँ यह दृश्य देखने को आते हैं।ऐसा नहीं कि जतिंगा में निश्चित समय है। साल के सितंबर से नवंबर माह तक का समय जब प्रकृति अपनी अनौखी छटा विखेरती है तब मानसून के महीने में यह रहस्यमयी प्रसंग उत्पन्न होता है। जब हवा दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है और काली अंधेरी चंद्रमा रहित रात में संध्या 7 बजे से रात्री 9 बजे तक कोहरे और धुंध का संयोग बनता है तब इसी अवसर पर जतिंगा की विश्व प्रसिद्ध रहस्यमयी घटना- पक्षियों का आत्मघात शुरू होता है। हाँ, यह एक रहस्यमयी घटना है क्योंकि पक्षी आत्महत्या की प्रवृति के लिए नहीं जाने जाते हैं।

साधारण जन मानस के लिए यह एक मनोरंजक घटना है जिसे आत्महत्या कह कर वे अपना आमोद-प्रमोद प्राप्त कर लेते हैं। परंतु वन्यजीव वैज्ञानियों, परिस्थितिकि विज्ञान के जानकारों एवं पर्यावरण वैज्ञानियों के लिए यह एक गूढ़ रहस्य बना हुआ है कि ऐसा क्या अनोखा है कि हर साल हजारों की संख्या में पक्षी यहाँ मृत पाये जाते हैं। इस पहेली को सुलझाने के कई प्रयास किए गए हैं, जिसमें कहा गया है कि पक्षी स्वयं आत्मघात के लिए यहाँ नहीं आते हैं अपितु वे यहाँ आकार अपनी दिशा भटक जाते हैं और काल के गाल में समा जाते हैं।

वैज्ञानिकों का मत है कि सितंबर से नवंबर माह में बारिश एवं कोहरे से सम्पूर्ण वातावरण अत्यंत क्लिष्ट हो जाता है, ऐसे समय में पक्षी अपनी दिशा परखने कि क्षमता खो देते है और भ्रमित हो जाते है। रात्रि में जब स्थानीय

जन प्रकाश करते है तो ये निरीह पक्षी उसी तरफ उड़ चलते हैं जिस कारण इनकी बड़ी संख्या में मृत्यु होती है। वैज्ञानियों में इस बात पर अभी भी सहमति नहीं है कि पक्षी दिशा भ्रमित कैसे हो सकते हैं? कारण यह है कि कई पक्षी जैसे कि साइबेरियन क्रेन, ब्लू थ्रोट लौंग बिल्ड पाईपेट, स्टारलिंग, वुड सेंडपाइपर उत्तरीय पिनटेल आदि सुदूर देशों से कई प्रकार की विषम परिस्थितयों का सामना कर के आते हैं इन्हें दिशा भ्रम नहीं होता। ये साल दर साल एक ही समय पे एक साथ अपने प्रवास के लिए भारत के विभिन्न हिस्सों में जाते हैं फिर जतिंगा इस से भिन्न क्यों है। वैज्ञानिकों ने इस रहस्य से पर्दा उठाने का प्रयास किया है। एक अध्ययन में यह तथ्य प्रकट हुआ है कि जो भी पक्षी यहाँ मृत होते है उनमें प्रवासी पक्षी की तुलना में स्थानीय पक्षियों की संख्या अधिक है। यह भी अनुमान लगाया गया है कि मानसून के उत्तरार्ध मे असम की अधिकाँश जल स्त्रोत बाढ़ में डूब जाते हैं। पक्षी अपने प्राकृतिक आवास खो देते हैं और उन्हें दूसरे स्थानों के लिए प्रवास करना पड़ता है। जतिंगा इनके प्रवास मार्ग में पड़ता है और यहाँ आकर पक्षी दिशाभ्रमित हो जाते हैं। भ्रमित पक्षी प्रकाश स्त्रोत के पास रुक जाते हैं और घबड़ाये हुए पक्षी वहाँ से उड़ने का प्रयास भी नहीं करते हैं। बुद्धिजीवियों का मत हैं कि कुछ पक्षी तो दिशा भ्रमित होते हैं और मार्ग में आने वाले पेड़ों और ऊँचे ऊँचे बाँस के झुरमुटों से टकराकर मर जाते हैं किन्तु अधिकांश पक्षी स्थानीय जनों के द्वार शिकार के उपक्रम में बांस-गुलेल से मार गिराये जाते हैं।

एक अन्य अध्ययन में प्रकट हुआ है कि कुल 44 प्रजाति के पक्षी प्रकाश स्त्रोतों की तरफ आकर्षित होते हैं, जो पक्षी उत्तर दिशा से आते हैं वे दक्षिण में रखे प्रकाश स्त्रोत की तरफ आकर्षित नहीं होते। यह भी सिद्ध किया गया है कि पक्षी सम्पूर्ण जतिंगा पहाड़ी की और आकृषित नहीं होते बल्कि एक निश्चित 1.5 किमी. लम्बे और 200 मीटर चाड़े भूपट्टी की और ही आकृषित होते हैं। जतिंगा विश्व में ऐसा एकमात्र स्थान नहीं है जहाँ इस प्रकार की घटना संज्ञान मेम आयी है। ऐसी घटना फिलिपींस, मलेशिया और भारत के अन्य राज्य मिज़ोरम में भी देखने को मिली है। जतिंगा रहस्य के संबंध में 1988 में डॉ. सलीम अली, डॉ. एस. सेनगुप्ता और डॉ. ए. रौफ आदि सम्मानित पक्षी वैज्ञानिकों ने जतिंगा रहस्य का अध्ययन किया है किन्तु किसी भी एक सिद्धांत परिकल्पना द्वारा इसका व्यापक स्पष्टीकरण संभव नहीं हो सका है अर्थात इस रहस्य को और भी गहराई से समझने की अति आवश्यकता है।

श्री अजय कुमार, वैज्ञानिक-बी
पारिस्थितिकी एवं जैवविविधता प्रभाग

शांति

शांति, शांति, शांति
जिसको पाने के लिए
तरसते है हर कोई।

चारों ओर फैला
आतंक और दंगा
बन गया
अपनो का ही खून का प्यासा।

अगर यही है
जीव श्रेष्ठ प्राणी
मानव का उदारता
इससे तो अच्छा
पंछी और पशु का जीवन बिताना।
आओ फैलाएँ
मलाला और गांधी के वार्ता
हर कोई अपनाए
अहिंसा का रास्ता।
हम सबकी यही है आशा
शांति के रंगों से
रंग ले धरती माता॥

निबेदिता बरुआ दत्त
अनुसंधान सहायक
जैव-पर्वेक्षण एवं स्वदेशी ज्ञान प्रभाग

हिन्दी प्रकोष्ठ की गतिविधियां

हिन्दी कार्यशाला:

(क) संस्थान के जैवप्रौद्योगिकी एवं अनुवांशिकी प्रभाग में दिनांक २३ जून, २०१५ को एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रभागाध्यक्ष सहित वैज्ञानिक, अनुसंधान अधिकारी और अन्य अनुसंधान सहायक उपस्थित थें। कार्यशाला **"कंप्यूटर में हिन्दी टाइपिंग"** विषय पर आयोजित किया गया था। कार्यशाला के प्रारंभ में डॉ. विपिन प्रकाश, वैज्ञानिक-डी एवं कार्यकारी हिन्दी अधिकारी ने सब का स्वागत किया और हिन्दी कार्यशाला की उपयोगिता संबंधी जानकारी दी। उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रमों के तहत विनिर्दिष्ट लक्ष्यों के बारे में जानकरी प्रदान की। इसके उपरान्त

प्रतिभागियों को हिन्दी में टाइपिंग करना सिखाया । ई-मेल के जरिए हिन्दी में लिखे हुआ पत्र किस तरह भेजा जा सकता है उस पर भी चर्चा की गई। हिन्दी टाइपिंग में कर्मचारियों के समस्याओं का निष्पादन भी किया गया। इसके अतिरिक्त गूगल (Google) के जरिए हिन्दी लिप्यन्तरण एवं अनुवाद की भी जानकारी दी गई।

ख) संस्थान के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 14 दिसंबर, २०१५ को प्रातः ११बजे "राजभाषा हिन्दी" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में संस्थान के नवनियुक्त अनुसचिवीय कर्मचारी उपस्थित थें। कार्यशाला के प्रारंभ में हिन्दी प्रकोष्ठ की ओर से सभी नवनियुक्त कर्मचारियों का स्वागत

किया गया और हिन्दी कार्यशाला की उपयोगिता संबंधी जानकारी दी गई। इसके उपरान्त प्रतिभागियों को राजभाषा हिन्दी से संबंधित विभिन्न पहलुओं का परिचय कराया गया। संस्थान में सक्रिय राजभाषा कार्यान्वयन समिति और इसके कार्यों के बारे में जानकारी दी गई। उनको विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में भी जानकारी प्रदान की गई। व्यावहारिक ज्ञान के उपरान्त कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने के लिए सहायक सामग्री दी गई और उनके समस्यओं का निराकरण किया गया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन द्वारा कार्यशाला का समापन हुआ।

बजे एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में डॉ. आर.एस.सी. जयराज, निदेशक, व.व.अ.सं. जोरहाट एवं प्रभागों के प्रभागाध्यक्ष व अन्य कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यशाला के प्रारंभ में हिन्दी प्रकोष्ठ की ओर से डॉ. विपिन प्रकाश, वैज्ञानिक-डी (प्रभारी, हिन्दी अधिकारी) ने सभी कर्मचारियों का स्वागत किया और हिन्दी कार्यशाला की उपयोगिता संबंधी जानकारी दी। स्वागत भाषण के उपरांत हिन्दी शिक्षण योजना के तहत हिन्दी भाषा परीक्षा पास कार्मिकों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र, सम्मानीय निदेशक महोदय, डॉ. जयराज (अध्यक्ष, राकास) के द्वारा वितरण किए गए। इसी अवसर पर वर्ष २०१४-१५ के लिए सरकारी कामकाज (टिप्पणी/आलेखन) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन स्वरूप तीन कार्मिकों को पुरस्कार प्रदान किया गया जिनमें श्रीमती दीपान्विता डेका, उच्च श्रेणी लिपिक को प्रथम, श्रीमती प्रीतिमणि दास बोरा, पुस्तकालय सूचना सहायक को द्वितीय और श्री प्रतुल हजारिका, अनुसंधान सहायक को तृतीय प्रमुख पुरस्कार प्राप्त-कर्ता हैं।

पुरस्कार वितरण के उपरांत, डॉ. आर.एस.सी. जयराज, निदेशक एवं अध्यक्ष, राकास ने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रतिभागियों को राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए एवं कार्मिकों को विभिन्न पत्रिकाओं में हिन्दी में शोध पत्र, लेख आदि प्रकाशित करवाने का सुझाव दिया।

हिन्दी सप्ताह समारोह– २०१५:

संस्थान में ८ से १५ सितंबर, २०१५तक विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हर्षोल्लास से हिन्दी सप्ताह मनाया गया। हिन्दी सप्ताह का शुभारंभ ८ सितंबर को प्रातः उद्घाटन समारोह के साथ किया गया था जिसमें संस्थान के निदेशक, डॉ. आर.एस.सी. जयराज तथा प्रभागों के प्रभागाध्यक्ष, सभी वैज्ञानिकगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण और शोधार्थी उपस्थित थें। कार्यक्रम का शुभारंभ पारंपरिक तरीके से दीप प्रज्वलित करके किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में माननीय निदेशक महोदय डॉ. आर.एस. सी. जयराज ने भाषा सीखने के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि कोई भी व्यक्ति सिर्फ एक भाषा तक ही सीमित न रहे। भाषा सीखना एक कला है। जितनी भाषा हम सीखेंगे उतनी हमारी विभिन्न प्रदेशों के लोगों से संपर्क करने की क्षमता बढ़ेगी। आपसी सांस्कृतिक संवर्धन तभी हो सकता है। हिन्दी सप्ताह के प्रथम दिन अर्थात् दिनांक ८ सितंबर को निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। निबंध लेखन के विषय थें – क) भारत की उन्नति में हिन्दी भाषा का योगदान, ख) भारत की अखंडता और राजभाषा , और ग) असम की संस्कृति ।

हिन्दी सप्ताह के दूसरे दिन अर्थात ९सितंबर को श्रुतलेखन और हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। हिन्दी सप्ताह के तीसरे दिन (दिनांक १० सितंबर) कर्मचारियों के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। अशुभाषण प्रतियोगिता के उपरांत राजभाषा हिन्दी में वैज्ञानिक शोध को बढ़ावा देने के लिए राजीब कुमार कलिता, वैज्ञानिक-ई ने 'बांस और उपयोगिता' विषय पर एक व्याख्यान रखा।

हिन्दी सप्ताह के चौथे दिन दिनांक ११ सितंबर को सम्मेलन कक्ष में हिन्दी में वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था 'इंटरनेट, शिक्षगुरु की अहमियत को नकार नहीं सकते है (विपक्ष/पक्ष)"। वाद-विवाद प्रतियोगिता के वाद डॉ. गौरव मिश्रा, वैज्ञानिक-बी ने 'मृदा-एक परिचय'विषय पर प्रस्तुति रखा।

दिनांक १३ सितंबर को संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों के बच्चों और गृहिणियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

"वर्षारण्यम" हिन्दी-असमीया ई-पत्रिका:

संस्थान के लिए यह एक हर्ष का विषय था कि श्री शंकर शर्मा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक के संपादकत्व में संस्थान से पहली बार असमीया और हिन्दी भाषा में छमाही ई-पत्रिका "वर्षारण्यम" का प्रकाशन किया गया। पत्रिका का लोकार्पण दिनांक १३ सितंबर, २०१५ को डॉ. एस. पी. सिंह, उप महानिदेशक (प्रशासन), भा. वा. अ. शि. प. के करकमलों से किया गया। इस संबंध में आयोजित बैठक में माननीय डॉ. आर.एस.सी. जयराज, निदेशक तथा सभी वरिष्ठ वैज्ञानिकगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण और उनके परिवार के सदस्य उपस्थित थे।

दिनांक १५ सितंबर को प्रातः १० बजे सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए प्रश्नोत्तरी (क्विज़) प्रतियोगिता आयोजित की गई।

हिन्दी सप्ताह का समापन दिनांक १५ सितंबर, २०१५ के अपराह्न आयोजित एक सभा के द्वारा किया गया। सभा में मुख्य अतिथि के रूप में हिन्दी साहित्य के अध्ययन-अध्यापन से जुड़े डॉ. विजय कुमार वर्मा, प्रोफ. एवं

विभागाधयक्ष, हिन्दी विभाग, जगन्नाथ बरुआ महाविद्यालय, जोरहाट आमंत्रित थे। सभा का शुभारंभ श्रीमती मौसुमी भट्टाचार्य के गायन से किया गया। सर्वप्रथम निदेशक आर.एस.सी. जयराज जी ने मुख्य अतिथि डॉ. विजय कुमार वर्मा को असमीया "फुलाम गामोछा" और स्मृतिचिह्न स्वरूप उपहार से उनका स्वागत किया। इसके बाद डॉ. विपिन प्रकाश, कार्यकारी हिन्दी अधिकारी ने सप्ताह भर आयोजित कार्यक्रमों की संक्षिप्त प्रतिवेदन सभा के समक्ष प्रस्तुत किया। अपने भाषण में मुख्य अतिथि डॉ. वर्मा जी ने हिन्दी के शुद्ध प्रयोग पर ज़ोर दिया। सरलीकरण के पक्ष में उन्होंने हिन्दी में अन्य क्षेत्रीय भाषाओं से शब्दावली ग्रहण करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इसके बाद हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित व्याख्यान माला में हिन्दी में वैज्ञानिक कार्य के व्याख्याता राजीब कुमार कलिता, वैज्ञानिक-ई और डॉ. गौरव मिश्रा, वैज्ञानिक-बी को मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित किया गया। उपस्थित सभासदों ने हिन्दी सप्ताह और आयोजित कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार व्यक्त किए और इन कार्यक्रमों की सराहना की। श्रीमती निबेदिता बरुआ दत्त ने स्वरचित कविता पाठ से सबका मन मोह लिया। सभासदों के वक्तव्य के बाद सप्ताह भर आयोजित विभिन्न प्रतियोगितओं के विजेताओं की घोषणा की गई और उनको पुरस्कार व प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। माननीय निदेशक आर.एस.सी. जयराज ने अपने भाषण में हिन्दी सहित अन्य सभी क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मानीय आसन प्रकट किया। समारोह का संचालन कुमारी प्रिया ढुंगना, वरिष्ठ शोधार्थी, वन रक्षण प्रभाग कर रही थी।

हिन्दी सप्ताह पर मीडिया कवरेज

दैनिक पूर्वोदय

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान में हिन्दी सप्ताह शुरू

নিৰ্ভীক সাংবাদিকতাৰ প্ৰতীক

দৈনিক জনমভূমি

e-paper : www.dainikjanambhumi.co.in.

September 9, 2015

বৰ্ষা অৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠানত হিন্দী সপ্তাহৰ উদ্বোধনী সমাৰোহ

যোৰহাট ঃ ৮ ছেপ্টেম্বৰ ঃ বৰ্ষা অৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠানত আজিৰে পৰা ১৪ ছেপ্টেম্বৰলৈ হিন্দী সপ্তাহ সমাৰোহৰ আয়োজন কৰিছে। প্ৰতিষ্ঠানৰ সঞ্চালক আৰ এছ চি জয়ৰাজ, ভা ব সে কে প্ৰমুখ্যে কৰি সকলো বিষয়া-কৰ্মচাৰীৰ উপস্থিতিত আজি পুৱা ১০ বজাত উক্ত সপ্তাহৰ উদ্বোধনী অনুষ্ঠান আৰম্ভ হয়। পৰম্পৰাগতভাৱে বন্তি প্ৰজ্বলনেৰে আৰম্ভ হোৱা উক্ত অনুষ্ঠানত বিজ্ঞানী ডি তথা কাৰ্যনিৰ্বাহক হিন্দী বিষয়া ড° বিপিন প্ৰকাশে আয়োজিতব্য সপ্তাহজোৰা অনুষ্ঠানসমূহৰ খতিয়ান দাঙি ধৰে। মঞ্চত উপবিষ্ট অন্যান্য বিভাগীয় মুৰব্বীসকলে ভাষাৰূপে হিন্দীৰ গুৰুত্ব আৰু ভূমিকাৰ উল্লেখেৰে সমাৰোহৰ বিভিন্ন অনুষ্ঠানত বিষয়া-কৰ্মচাৰীৰ সক্ৰিয় অংশ গ্ৰহণ কামনা কৰে। ইয়াৰ পাছত কনিষ্ঠ হিন্দী অনুবাদক শংকৰ শৰ্মাই প্ৰতিষ্ঠানৰ হিন্দী কোষৰ ৰাজভাষা বিষয়ক সমস্ত গতিবিধিৰ এক সংক্ষিপ্ত অৱলোকণ কৰে। সভাপতিৰ আসনৰ পৰা প্ৰতিষ্ঠানৰ সঞ্চালকে ভাষা শিক্ষণৰ সুফলসমূহ দাঙি ধৰে। উক্ত অনুষ্ঠানৰ আঁত ধৰে জ্যেষ্ঠ গৱেষণা কৰ্মী প্ৰিয়া ঢুংগানাই। আজি প্ৰবন্ধ লিখা প্ৰতিযোগিতাও অনুষ্ঠিত হয়।

দৈনিক জনমভূমি

বৰ্ষা অৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠানত 'হিন্দী সপ্তাহ সমাৰোহ' উদ্‌যাপন

दैनिक पूर्वोदय

वर्षा वन अनुसंधान में हिन्दी सप्ताह संपन्न

हिन्दी सप्ताह समारोह - २०१५ की कुछ झलकियाँ

भारत की अखंडता और राजभाषा

(संस्थान में हिन्दी दिवस २०१५ के शुभ अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत निबंध)

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं को दूसरों के सामने व्यक्त कर सकते हैं। यह एक ऐसा माध्यम जो दिलों को जोड़ती है और भाईचारा बढ़ाती है। हमारे भारत में भाषाएँ अनेक हैं, लेकिन 1949 के 14 सितंबर को हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया। हिन्दी एक ऐसी बोली है जो आजकल लगभग हर किसी को समझ में आती है और थोड़ी सी मेहनत से बोली जा सकती है। दूसरी ओर से देखा जाए तो आज पूरा भारत हिन्दी से अखण्डित है, क्योंकि एक आदमी भले ही देश के किसी प्रांत में चला जाये वह अपनी बात और भावनाएं आसानी से एक अजनबी के सामने रख सकता है। इसलिए यह स्पष्ट है कि भारती की एकता में हिन्दी का बहुत बड़ा योगदान है। हम कह सकते है कि हैं कि –

भाषा है अनेक,
पर 'हिन्दी' है अनेकों में एक;
जो लाती है सहज भावनाओं को,
और जोड़ती है दिल, एक एक॥

हिन्दी का फैलाव एवं प्रसार:

कहीं पढ़ने में आया था कि हिन्दी एक गरीब भाषा है। बात भले ही पुरानी है, लेकिन उसको झुठलाने में बहुत वक्त गुजर गया। क्योंकि आज के दौड़ में हिन्दी भाषा की तुलना में अँग्रेजी को ज्यादा महत्व दिया जाता है। बहुत लोगों की यह धारणा है कि अँग्रेजी भाषा में शिक्षित व्यक्ति समाज के अच्छे तबके के साथ शामिल हो सकते है। मतलब इसमें मज़बूरी छुपी होती है। यदि कहीं भाषण देना हो जहां किसी को अन्य भाषा समझमें नहीं आ रही हो, तब ही हिन्दी का उपयोग होता है अन्यथा नहीं। आजकल स्कूलों में भी जो हिन्दी का पाठ्यक्रम दिया गया है वह सिर्फ उसी के लिए पढ़ाया जाता है और बच्चे भी केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए पढ़ते हैं, प्राध्यान्यता वे अँग्रेजी को ही देते है। जबकि वे भूल जाते है कि हिन्दी हमारी राजभाषा है और उसको सम्मान देना हमारा कर्त्तव्य है। जहां कहीं भी हम जाए भले ही वहाँ अँग्रेजी न समझ पाये लेकिन हिन्दी न समझे ऐसा बहुत कम देखा जाता है।

हिन्दी का फैलाव एवं प्रसार:

कहीं पढ़ने में आया था कि हिन्दी एक गरीब भाषा है। बात भले ही पुरानी है, लेकिन उसको झुठलाने में बहुत वक्त गुजर गया। क्योंकि आज के दौड़ में हिन्दी भाषा की तुलना में अँग्रेजी को ज्यादा महत्व दिया जाता है। बहुत लोगों की यह धारणा है कि अँग्रेजी भाषा में शिक्षित व्यक्ति समाज के अच्छे तबके के साथ शामिल हो सकते है। मतलब इसमें मज़बूरी छुपी होती है। यदि कहीं भाषण देना हो जहां किसी को अन्य भाषा समझमें नहीं आ रही हो, तब ही हिन्दी का उपयोग होता है अन्यथा नहीं। आजकल स्कूलों में भी जो हिन्दी का पाठ्यक्रम दिया गया है वह सिर्फ उसी के लिए पढ़ाया जाता है और बच्चे भी केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए पढ़ते हैं, प्राध्यान्यता वे अँग्रेजी को ही देते है। जबकि वे भूल जाते है कि हिन्दी हमारी राजभाषा है और उसको सम्मान देना हमारा कर्त्तव्य है। जहां कहीं भी हम जाए भले ही वहाँ अँग्रेजी न समझ पाये लेकिन

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निर्देश

हिन्दी न समझे ऐसा बहुत कम देखा जाता है।

विद्यालय, महाविद्यालय, ऑफिस व अन्य संस्थानों में हिन्दी की व्यवहारिकता पर जोड़ देना चाहिए। क्योंकि मनुष्य को जीविका या अन्य कारणवश एक जगह से दूसरी जगह, एक प्रांत से दूसरे प्रांत तक आना जाना पड़ता है। ऐसे समय हिन्दी के द्वारा ही वह अपनी बात व्यक्त कर सकता है, सामने वाले कि बात समझ सकता है, उसको जान सकता है। इससे संबंध मजबूत होते है जो भारत की अखण्डता में सहायक बनते है।

विद्यालय, महाविद्यालय, ऑफिस व अन्य संस्थानों में हिन्दी की व्यवहारिकता पर जोड़ देना चाहिए। क्योंकि मनुष्य को जीविका या अन्य कारणवश एक जगह से दूसरी जगह, एक प्रांत से दूसरे प्रांत तक आना जाना पड़ता है। ऐसे समय हिन्दी के द्वारा ही वह अपनी बात व्यक्त कर सकता है, सामने वाले कि बात समझ सकता है, उसको जान सकता है। इससे संबंध मजबूत होते है जो भारत की अखण्डता में सहायक बनते है।

हमको करनी है कोशिश,
हमारा भारत रहे अखण्डित।
अन्य हर एक कड़ी के साथ,
हिन्दी को भी करनी है उद्धित॥

डेइजी दास, पूर्व शोधार्थी
जैवपर्वेक्षण एवं स्वदेशी ज्ञान

राजभाषा अधिनियम, 1963

(यथासंशोधित,1967)

(1963 का अधिनियम संख्यांक 19)

उन भाषाओं का, जो संघ के राजकीय प्रयोजनों, संसद में कार्य के संव्यवहार, केन्द्रीय और राज्य अधिनियमों और उच्च न्यायालयों में कतिपय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाई जा सकेंगी,उपबन्ध करने के लिए अधिनियम । भारत गणराज्य के चौदहवें वर्ष में संसद द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो:-

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ-

(1) यह अधिनियम राजभाषा अधिनियम, 1963 कहा जा सकेगा।

(2) धारा 3, जनवरी, 1965 के 26 वें दिन को प्रवृत्त होगी और इस अधिनियम के शेष उपबन्ध उस तारीख को प्रवृत्त होंगे जिसे केन्द्रीय सरकार,शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियत करे और इस अधिनियम के विभिन्न उपबन्धों के लिए विभिन्न तारीखें नियत की जा सकेंगी।

2. परिभाषाएं--इस अधिनियम में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,

(क) 'नियत दिन' से, धारा 3 के सम्बन्ध में, जनवरी, 1965 का 26वां दिन अभिप्रेत है और इस अधिनियम के किसी अन्य उपबन्ध के सम्बन्ध में वह दिन अभिप्रेत है जिस दिन को वह उपबन्ध प्रवृत्त होता है;

(ख) 'हिन्दी' से वह हिन्दी अभिप्रेत है जिसकी लिपि देवनागरी है।

3. संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा का रहना--

(1) संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि की समाप्ति हो जाने पर भी, हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा, नियत दिन से ही,

(क) संघ के उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए जिनके लिए वह उस दिन से ठीक पहले प्रयोग में लाई जाती थी ; तथा

(ख) संसद में कार्य के संव्यवहार के लिए प्रयोग में लाई जाती रह सकेगी :

परंतु संघ और किसी ऐसे राज्य के बीच, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग में लाई जाएगी:

परन्तु यह और कि जहां किसी ऐसे राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है और किसी अन्य राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, बीच पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाया जाता है, वहां हिन्दी में ऐसे पत्रादि के साथ-साथ उसका अनुवाद अंग्रेजी भाषा में भेजा जाएगा :

परन्तु यह और भी कि इस उपधारा की किसी भी बात का यह अर्थ नहीं लगाया जाएगा कि वह किसी ऐसे राज्य को, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संघ के साथ या किसी ऐसे राज्य के साथ, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है, या किसी अन्य राज्य के साथ, उसकी सहमति से, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाने से निवारित करती है, और ऐसे किसी मामले में उस राज्य के साथ पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बाध्यकर न होगा ।कार्यालय के और दूसरे मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के बीच ;ii) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के

(2) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी या अंग्रेजी भाषा--

(i) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या

(या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के बीच ;

(iii) केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के और किसी अन्य ऐसे निगम या कम्पनी या कार्यालय के बीच ;

प्रयोग में लाई जाती है वहां उस तारीख तक, जब तक पूर्वोक्त संबंधित मंत्रालय, विभाग, कार्यालय या विभाग या कम्पनी का कर्मचारीवृद हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता, ऐसे पत्रादि का अनुवाद, यथास्थिति, अंग्रेजी भाषा या हिन्दी में भी दिया जाएगा।

(3) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही--

(i) संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किए जाते हैं ;

(ii) संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज-पत्रों के लिए ;

(iii) केन्द्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली

गई अनुज्ञप्ि‍ियों,अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा-प्ररूपों के लिए, प्रयोग में लाई जाएगी।

(4) उपधारा (1) या उपधारा (2) या उपधारा (3) के उपबन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना यह है कि केन्द्रीय सरकार धारा 8 के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा उस भाषा या उन भाषाओं का उपबन्ध कर सकेगी जिसे या जिन्हें संघ के राजकीय प्रयोजन के लिए, जिसके अन्तर्गत किसी मंत्रालय,विभाग, अनुभाग या कार्यालय का कार्यकरण है, प्रयोग में लाया जाना है और ऐसे नियम बनाने में राजकीय कार्य के शीघ्रता और दक्षता के साथ निपटारे का तथा जन साधारण के हितों का सम्यक ध्यान रखा जाएगा और इस प्रकार बनाए गए नियम विशिष्टतया यह सुनिश्चित करेंगे कि जो व्यक्ति संघ के कार्यकलाप के सम्बन्ध में सेवा कर रहे हैं और जो या तो हिन्दी में या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण हैं वे प्रभावी रूप से अपना काम कर सकें और यह भी कि केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं है उनका कोई अहित नहीं होता है।

(5) उपधारा (1) के खंड (क) के उपबन्ध और उपधारा (2), उपधारा (3) और उपधारा (4), के उपबन्ध तब तक प्रवृत्त बने रहेंगे जब तक उनमें वर्णित प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए ऐसे सभी राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा, जिन्होंने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संकल्प पारित नहीं कर दिए जाते और जब तक पूर्वोक्त संकल्पों पर विचार कर लेने के पश्चात् ऐसी समाप्ति के लिए संसद के हर एक सदन द्वारा संकल्प पारित नहीं कर दिया जाता।

4 .राजभाषा के सम्बन्ध में समिति -

(1) जिस तारीख को धारा 3 प्रवृत्त होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात, राजभाषा के सम्बन्ध में एक समिति, इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर, गठित की जाएगी।

(2) इस समिति में तीस सदस्य होंगे जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे तथा दस राज्य सभा के सदस्य होंगे, जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों तथा राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

(3) इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करें और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करें और राष्ट्रपति उस प्रतिवेदन को संसद् के हर एक सदन के समक्ष रखवाएगा और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएगा।

(4) राष्ट्रपति उपधारा (3) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर और उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किए हों तो उन पर विचार करने के पश्चात् उस समस्त प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेगा :

परन्तु इस प्रकार निकाले गए निदेश धारा 3 के उपबन्धों से असंगत नहीं होंगे।

5. केन्द्रीय अधिनियमों आदि का प्राधिकृत हिन्दी अनुवाद-

(1) नियत दिन को और उसके पश्चात् शासकीय राजपत्र में राष्ट्रपति के प्राधिकार से प्रकाशित--

(क) किसी केन्द्रीय अधिनियम का या राष्ट्रपति द्वारा प्रख्यापित किसी अध्यादेश का, अथवा

(ख) संविधान के अधीन या किसी केन्द्रीय अधिनियम के अधीन निकाले गए किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि का हिन्दी में अनुवाद उसका हिन्दी में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

(2) नियत दिन से ही उन सब विधेयकों के, जो संसद के किसी भी सदन में पुरःस्थापित किए जाने हों और उन सब संशोधनों के, जो उनके समबन्ध में संसद के किसी भी सदन में प्रस्तावित किए जाने हों, अंग्रेजी भाषा के प्राधिकृत पाठ के साथ-साथ उनका हिन्दी में अनुवाद भी होगा जो ऐसी रीति से प्राधिकृत किया जाएगा, जो इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा विहित की जाए।

6. कतिपय दशाओं में राज्य अधिनियमों का प्राधिकृत हिन्दी अनुवाद-

जहां किसी राज्य के विधानमण्डल ने उस राज्य के विधानमण्डल द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में प्रयोग के लिए हिन्दी से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां, संविधान के अनुच्छेद 348 के खण्ड (3) द्वारा अपेक्षित अंग्रेजी भाषा में उसके अनुवाद के अतिरिक्त, उसका हिन्दी में अनुवाद उस राज्य के शासकीय राजपत्र में, उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से, नियत दिन को या उसके पश्चात् प्रकाशित किया जा सकेगा और ऐसी दशा में ऐसे किसी अधिनियम या अध्यादेश का हिन्दी में अनुवाद हिन्दी भाषा में उसका प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

7 .उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदि में हिन्दी या अन्य राजभाषा का वैकल्पिक प्रयोग-

नियत दिन से ही या तत्पश्चात् किसी भी दिन से किसी राज्य का राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व सम्मति से, अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी या उस राज्य की राजभाषा का प्रयोग, उस राज्य के उच्च न्यायालय द्वारा पारित या दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश के प्रयोजनों के लिए प्राधिकृत कर सकेगा और जहां कोई निर्णय, डिक्री या आदेश (अंग्रेजी भाषा से भिन्न) ऐसी किसी भाषा में पारित किया या दिया जाता है वहां उसके साथ-साथ उच्च न्यायालय के प्राधिकार से निकाला गया अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद भी होगा।

8. नियम बनाने की शक्ति -

(1) केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी ।

(2) इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी । यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रममिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात वह ऐसे परिवर्तित रुप में ही प्रभावी होगा । यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात यह निस्प्रभाव हो जाएगा । किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निस्प्रभाव होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

9 . कतिपय उपबन्धों का जम्मू-कश्मीर को लागू न होना-

धारा 6 और धारा 7 के उपबन्ध जम्मू-कश्मीर राज्य को लागू न होंगे।

অসমীয়া বিভাগ

প্রদূষণ মুক্ত ঘৰুৱা পৰিৱেশ

অসমত বর্ষা ঋতু এপ্রিল অর্থাৎ ব'হাগ মাহৰ পৰা আৰম্ভ হয় বুলি ক'লেও বঢ়াই কোৱা নহয় । সেমেকা উষ্ণ জলবায়ুয়ে ইয়াৰ পৰিৱেশ বৈচিত্রময় কৰি তোলে । পৰিৱেশ সলনি হোৱাৰ লগে লগে সৰু সৰু জীৱকুল যেনে পঁইতাচোৰা, পৰুৱা, ম'হ পোকপতঙ্গ আদি সক্রিয় হৈ উঠে । গছত নতুন পাত ওলোৱাৰ লগে লগে নানা ৰং বিৰঙৰ বিছা, পলু, ফৰিং আদিৰে ভৰি পৰে । শীতকালত প্রায়বোৰ পতঙ্গই শীতনিদ্রাত থাকে। অসমৰ প্রাকৃতিক পৰিবেশত পোকপতঙ্গই বাৰুকৈয়ে প্রভাৱ পেলায় । বিশেষকৈ প্রায়বোৰ মানুহৰ ঘৰত এই বিলাকে বাৰুকৈ সমস্যাৰ সৃষ্টি কৰে । ডাঙৰ ডাঙৰ চহৰত এই বিলাক নিয়ন্ত্রণ কৰিবলৈ বিশেষ ব্যৱস্থা হাতত লোৱা দেখা যায় । বর্ত্তমান এই কীটনাশক বিলাকৰ অত্যাধিক ব্যৱহাৰে জনজীৱনৰ স্বাস্থ্যৰ প্রতি ভাবুকি কঢ়িয়াই আনিছে । সেয়ে ঘৰুৱাভাৱে প্রস্তুত কৰা দ্রব্য অথবা বনৌষধি জাতীয় দ্রব্য ব্যৱহাৰ কৰি সুফল পাব পাৰি।

পঁইতাচোৰা হৈছে সকলো ঋতুতে থকা অতি সর্বভক্ষী জীৱ। অতি গৰম অতি ঠাণ্ডাতো ই জীয়াই থাকে। গ্রীস্মকালত ইয়াৰ প্রজনন ক্ষমতা দ্রুত হয় সেয়ে এই সময়ছোৱাত ইয়াক সঘনাই দেখিবলৈ পোৱা যায়।

প্রতিকাৰ : তিনিচামুচ ময়দা বা আটাৰ লগত এক(১) চামুচ বৰিক পাওডাৰ আৰু আধা চামুচ চেনি মিহলাই আটা সনাৰ দৰে পানীৰে সানি সৰু সৰু লাডু বনাব লাগে । এই লাডুবিলাক পঁইতাচোৰা থকা বাচনৰ ড্রয়াৰ, কিতাপৰ আলমাৰী আদিত থৈ দিলে পঁইতাচোৰা বিলাক নিজে নিজে ওলাই আহে আৰু মৰি যায় । এই ধৰণে দুই তিনিমাহৰ মূৰে মূৰে ব্যৱহাৰ কৰি পঁইতাচোৰাবিলাকক একেবাৰে নিয়ন্ত্রণ কৰিব পৰা যায় ।

গ্রীষ্মকালত পৰুৱাৰ উপদ্রৱ প্রায়ে দেখা যায় । পৰুৱা নিয়ন্ত্রণৰ বাবে বজাৰত অনেক প্রতিষেধক পোৱা যায় । সেইবোৰ সঘনাই বৰ্ব্যহাৰ কৰাটো স্বাস্থ্যৰ বাবে হানিকাৰক । কিবা কাৰণত ৰন্ধা বঢ়া কৰোতে মিঠা জাতীয় বস্তু পৰিলে তৎক্ষণাৎ পৰুৱা বিৰাজমান হয়। এনেক্ষেত্রত পৰুৱা আঁতৰাবৰ বাবে বিশেষ ব্যৱস্থা লবলৈ অসুবিধা হয় ।

প্রতিকাৰ: পৰুৱা অহাযোৱা কৰা পথ অথবা পৰুৱা থকা গাঁত বোৰ চিহ্নিত কৰি বৰিক পাওডাৰ চটিয়াই দিলে পৰুৱাৰ উপদ্রৱ লাঘব কৰিব পৰা যায় । বৰিক পাওডাৰ যিহেতু হানিকাৰক নহয় আৰু কম খৰচী, সহজলভ্য, সেয়ে সপ্তাহত এবাৰকৈ ব্যৱহাৰ কৰিব পৰা যায় । ইয়াৰ ওপৰি কেৰাচিন তেল প্রয়োগ কৰিব পৰা যায়, কিন্তু ই বৰ খৰচী ।

বাৰিষা বৰষুণ অহাৰ লগে লগে কেঁচু, বিছা, কেৰেলুৱা আদি বেছিকৈ ওলায় আৰু ঘৰৰ ভিতৰত প্রৱেশ কৰে । এনেধৰণৰ জীৱকুলে ঘৰুৱা পৰিৱেশ বিনষ্ট কৰে ।

প্রতিকাৰ : এনে অৱস্থাত ঘৰলৈ সোমোৱা প্রৱেশ দ্বাৰত বিশেষকৈ ৰাতিৰ ভাগত নিমখ বা কেৰাচিন তেলৰ লক্ষ্মণ ৰেখা তৈয়াৰ কৰি দিলে এই বিলাকে ঘৰৰ ভিতৰত সোমাব নোৱাৰে ।

গ্রীষ্ম তথা বর্ষাকালত বায়ুত আর্দ্রতা বেছি থাকে । এই সময়ছোৱাত অতি সোনকালে খাদ্যসম্ভাৰত ভেঁকুৰ, পোক, লেটা আদিয়ে দেখা দিয়ে আৰু খোৱাৰ অনুপযোগী কৰি তোলে । খাদ্যসামগ্রী যেনে চাউল, ডাইল, আটা, চুজি আদি পাত্রবোৰত নিমপাত, শুকানজলকীয়া আদি সুমুৱাই ৰাখিব লাগে । তেতিয়া এই সামগ্রীসমূহ বহুদিনলৈকে ব্যৱহাৰ কৰিব পৰা যায় । কেতিয়াবা কেষ্টৰ অইল সানি ৰ'দত থৈ বায়ুমুক্ত পাত্রত ভালকৈ সাঁফৰ মাৰি থব লাগে ।

দৈনিক ব্যৱহাৰ হোৱা কিছুমান খাদ্যসম্ভাৰ ধুই ব্যৱহাৰ কৰিব নোৱাৰি । বর্ষাকালত চেনি বটলত পৰুৱা থকাটো সাধাৰণ কথা; ইয়াত যদি তিনি চাৰি টুকুৰা কর্পুৰ দি থোৱা যায় তেন্তে পৰুৱাৰ পৰা নিস্তাৰ পাব পাৰি ।

গ্রীষ্মকালত ম'হ হৈছে আন এক বেমাৰ বাহক । মেলেৰিয়া, ডেংগো, এনকেফেলাইটিছ আদি ৰোগ ম'হৰ দ্বাৰা হয়। আজিকালি প্রায়ে বজাৰত অনেক ম'হ খেদা প্রতিষেধক পোৱা যায় । কিন্তু এইবোৰ স্বাস্থ্যৰ বাবে অতি হানিকাৰক । বিশেষকৈ কণ কণ শিশুৰ জীর্ণ কাঁহ, এলার্জি আদিৰ মূলকাৰক হৈছে ম'হ খেদা প্রতিষেধক। পৰাপক্ষত এই প্রতিষেধক বোৰক কম ব্যৱহাৰ কৰি তাৰ পৰিবর্তে ঘৰতে নাৰিকলৰ বাকলিৰ লগত ধূনা আৰু কর্পূৰ ব্যৱহাৰ কৰি ম'হৰ উপদ্রৱৰ পৰা পৰিত্রাণ পাব পাৰি।

মাহেকে পষেকে ঘৰৰ ভিতৰ আৰু বাহিৰ দুয়ো কাষে হালধি-নহৰু সমপৰিমাণৰ খুন্দি ৰস উলিয়াই পানীৰ লগত মিহলাই চতিয়াই দিলে ম'হৰ পৰা ৰক্ষা পাব পাৰি।

বর্তমান ব্যস্ততাপূর্ণ জীৱনত বজাৰত পোৱা সহজলভ্য পতঙ্গ প্রতিৰোধী সামগ্রী সমূহ মানৱ জীৱনত আনেক ৰোগৰ কাৰক হিচাবে চিহ্নিত হৈছে । এনে অৱস্থাত সময় সুবিধা অনুযায়ী কম খৰচী, সহজলভ্য, থলুৱা বা ঘৰতে প্রস্তুত কৰা প্রতিষেধক ব্যৱহাৰ কৰি প্রদুষণমুক্ত ঘৰুৱা পৰিৱেশত জীৱন নির্বাহ কৰিবলৈ সক্ষম হ'ব।

ড° অৰুন্ধতী
গৱেষণা

মই এটা গল্প লিখিম

মই এটা গল্প লিখিম । বহুত দিনৰ পৰা ভাবি আছোঁ। বিয়াৰ আগতে কলেজত পঢ়ি থাকোতে, মাজে মাজে দুই এটা গল্প, কবিতা লিখাৰ অভ্যাস আছিল । এতিয়া একেবাৰে নাইকিয়া হ'ল । মাজে মাজে দুই এটা গল্প, কবিতা লিখাৰ অভ্যাস আছিল । মাজে মাজে দুই এটা বাতৰি কাকতত্তো প্ৰকাশ পাইছিল । এতিয়া সেই বোৰ স্মৃতি মাথোন । এতিয়া আকৌ এটা সুবিধা পাইছোঁ । অফিচৰ পৰাই এখন আলোচনী ওলাব বোলে । গতিকে ভাবিলোঁ ভাল সুবিধা এটা পাইছোঁ । এইবাৰ গল্প এটা লিখি দিব লাগিব । বহুত দিনৰ মূৰত মোৰ সাহিত্যিক মনটোৱে লিক লিকাই উঠিল ।

এতিয়া কথা হ'ল মোৰ গল্পৰ প্লট কি হ'ব ? প্ৰেমৰ গল্প লিখিবলৈ এতিয়া আৰু প্ৰেমৰ অনুভৱবোৰ নাই । সেই কোমল অনুভৱবোৰ মই গম নোপোৱাকৈয়ে নিমখ হালধিৰ টেমাত সোমালগৈ । তেন্তে ? কিহৰ ওপৰত লিখিম ? মোৰ সাংসাৰিক জীৱনৰ কাহিনী নে শাহু বোৱাৰীৰ কাহিনী ? হব, লিখিবলৈ বহিলে এনেয়ে প্লট এটা ওলাই যাব, মনতে ভাবিলোঁ । মুঠতে কাগজ কলম লৈ দুঘন্টা মান বহিলেই হ'ল । অফিচত দিনটো কেনেকৈ যায় যেন লাগিল। মনটো অলপ ভিতৰি ভিতৰি ভালো লাগিল । আজি এটা গল্প লিখিম । মনতে ভাবিলোঁ । যাওঁতে এক দিস্তা কাগজ আৰু এটা ভাল কলম লৈ যাব লাগিব । অফিচৰ পৰা যাওঁতে ৰাস্তাত স্বামীক ক'লো , মই এক দিস্তা কাগজ লৈ যাব লাগিব । তেওঁ সুধিলে কিয় ? ল'ৰা ছোৱালী কেইটাৰ বহী শেষ হ'ল নেকি ? 'নাই হোৱা' মোৰ চমু উত্তৰ । ঘৰৰ পদূলি পাওঁতেই দুয়োটা ল'ৰা ছোৱালী গেটৰ ওচৰৰ পৰা আগবঢ়াই নিবলৈ আহিল । লগতে এটা ৰেডিমেড প্ৰশ্ন, মোলৈ কি আনিছা ? মই ৰং পেঞ্চিল আনিবলৈ কৈছিলো নহয়; ল'ৰাৰ প্ৰশ্ন । মা, মোলৈ ফুচকা আনিলানে ? একো নানিলা মানে তুমি আজি চকলেট এটাও নানিলা, ছোৱালীৰ অভিযোগ । আজি গল্প লিখাৰ কথা ভাবি থাকোতে সব পাহৰিলোঁ । অ' মা, মোৰ চচিয়েলৰ টেষ্ট কপি থন আনিলানে ? ছোৱালীৰ পুনৰ চিঞৰ । মনে মনে ভাবিলো - হ'ব, মই অনা কাগজ দিস্তাৰ পৰাই দুই তিনিখন মানকৈ বান্ধি দিব লাগিব । আজি দিনটো চাহ একাপ ভালকৈ খাবলৈ পোৱা নাই, শহুৰ দেউতাৰ স্বৰ্গোক্তি । মনতে ভাবিলোঁ চাহ বনাই সকলোকে দি লওঁ । লগতে নিজেও খাই ল'লে গল্পটো লিখিবলৈ অলপ শক্তি পাম । 'মা, মই মেগি পাস্তা খাম, মই চ'কজ খাম' , ল'ৰা ছোৱালী দুটাৰ দাবী ।

ইহঁতকো খাবলৈ দি পঢ়াত বহুৱাই ল'লে মই গল্পটো লিখিবলৈ অলপ আজৰি পাম, মনতে ভাবিলোঁ । ঘড়ীটোলৈ চালো, চাৰে সাত দেখোন হ'লেই । হ'ব, একো নহয় । গোটেই ৰাতিটো আছে, লিখিম আৰু গল্পটো । একে বাৰে ভাতৰ যোগাৰটো কৰি লওঁ বুলি পাকঘৰত সোমালোঁ ।

ল'ৰা ছোৱালীৰ টিফিন, মোৰ টিফিন, স্বামীৰ টিফিন, চাহ খোৱা বাচন বৰ্তন আদি ধুই পাছদিনাৰ কাৰণে পাচলি কাটি সাজু কৰি ভাত ৰান্ধি আজৰি হওঁ মানে ৰাতি ন' বাজিল । মনতে ভাবিলোঁ, ল'ৰা ছোৱালী কেইটাক ভাত খুৱাই শুৱাই দিওঁ; নহ'লে পাছদিনা স্কুললৈ যাবলৈ সাৰেই নাপাব । তাৰ মাজতে সিহঁত দুটাৰ পাছদিনাৰ বাবে ইউনিফৰ্ম ইস্ত্ৰী কৰিলোঁ । পানী বটল দুটাত পানী ভৰালোঁ আৰু টিফিনত কি দিম অলপ মনতে ভাবি থলোঁ।

ইহঁত দুটা শুই থাকিল। ঘড়ীটোলৈ চালো ন বাজি পঞ্চলিছ মিনিট, হব একেবাৰে আমিও ভাত খাই আজৰি হৈ লওঁ । শহুৰ দেউতা, শাহুমা, স্বামী আৰু মই একে লগে ভাত খলোঁ । ভাত খাই বাচন বৰ্তন ধুই পাকঘৰটো চাফ চিকোন কৰি অঁতাও মানে এঘাৰ বাজিল ।ঘৰৰ সকলো শুবলৈ গ'ল । ভাগৰ আৰু টোপনি দুয়োটাই মোক হেঁচা মাৰি ধৰিছে । তথাপি কাগজ কলম লৈ টেবুলত বহিলোঁ । বিষয়ৰ ওপৰত চিন্তা কৰিলোঁ । ঠিক কৰিলোঁ, দুৰ্নীতিৰ ওপৰতেই লিখিম । মনত পৰিল মোৰ ভন্টিজনীৰ কথা । চাকৰি বিচাৰি দালালৰ পাকচক্ৰত পৰি সৰ্বস্বান্ত হোৱাৰ কথা । 'চাকৰি'- হঠাৎ মোৰ নিজৰ অফিচটোলৈ মনত পৰি গ'ল । মনত পৰিল দাঁত নিকতাই হাঁহি থকা বায়'মেট্ৰিক মেচিনটোলৈ । ঘড়ীটোলৈ চালোঁ, এঘাৰ বাজি পঞ্চলিছ মিনিট; আৰু দেৰি হ'লে কাইলৈ মই সময় মতে অফিচ নাপামগৈ । কাগজ কলম সামৰি থলোঁ । দৌৱা দৌৰিকৈ শুবলৈ আহিলোঁ । মোৰ আৰু গল্পটো লিখা নহ'ল ।

শ্ৰীমতী ৰীতাশ্ৰী খনিকৰ

গৱেষণা সহায়ক

চাকৰি জীৱনৰ অভিজ্ঞতা

মই ১৯৯৭ চনৰ মে' মাহৰ ১২ তাৰিখে এই প্ৰতিস্থানৰ চাকৰিত যোগদান কৰোঁ। প্ৰতিস্থানৰ সঞ্চালক আছিল - কে. জি. প্ৰসাদ চাৰ। জীৱনৰ প্ৰথম সাক্ষাৎকাৰ দিছিলোঁ। মই সৌহান নামৰ বৈজ্ঞানিক এজনৰ তত্ৱাৱধানত কাম কৰিছিলোঁ। প্ৰায় ৬ মাহ মানৰ পাছত কার্যালয় তৰফৰ পৰা মোক জনালে যে মই কইম্বাটুৰত থকা অন্য এটা প্ৰতিস্থানৰ পৰা এটা মেছিন এখন ট্ৰাকত আনিব লাগে। মোৰ মনটো ভাল লাগিছিল, তথাপিও অলপ ভয়ৰ ভাব্ আছিল, কাৰণ মই ইমান দূৰ অকলে কেতিয়াও ৰে'লগাড়ীত ভ্ৰমণ কৰা নাছিলোঁ। মই গুৱাহাটীলৈকেও অকলে গৈ পোৱা নাছিলোঁ। ঘৰত কথাটো কোৱাত বাধা দিয়া নাছিল । অৱশ্যে মহাবিদ্যালয়ত পঢ়ি থকাৰ সময়ত দিল্লীলৈ গৈছিলোঁ গ্ৰুপৰ স'তে, গতিকে সিমান চিন্তাৰ কাৰণ নাছিল । মোৰ লগত ২০,০০০.০০ টকা দিছিল। মোৰ টিকট গুৱাহাটীৰ পৰা আছিল, গতিকে গুৱাহাটীত হোটেলত থাকিব লগীয়া হৈছিল। তেতিয়া লৈকে হোটেলত থাকি পোৱা নাছিলোঁ। হোটেলখন ষ্টেচনৰ ওচৰতে ললোঁ। ৰাতিপুৱা ৪ বজাত ট্ৰেইন আছিল। ঠিক ৩ মান বজাত কোনোবাই মোক মতা যেন অনুমান হ'ল । দুৱাৰ মুখত মা ৰৈ আছে আৰু মোক কৈছে "উঠ বাবা, যাবৰ হ'ল নহয়" সপোনতে মাই মোক টোপনিৰ পৰা সাৰ পোৱাই দিছিল। এতিয়া মা নাই যদিও কেতিয়াবা মাৰ অনুপস্থিতি বৰকৈ অনুভৱ কৰোঁ। সেই সপোনটো এতিয়াও মোৰ মনত আছে। মাক ধন্যবাদ জনালোঁ। সেই সময়ত কোনো মোবাইল ফোন নাছিল । অফিচত লেণ্ড ফোন আছিল ।

৪ বজাৰ আগতেই মই ষ্টেচন পালোগৈ । অপেক্ষা কৰিলোঁ, ট্ৰেইন অহাৰ বাবে । যথা সময়ত আন যাত্ৰী সকল আহি ষ্টেচন পালেহি। মই এখন বেঞ্চত বহি আছিলোঁ, তেনেতে এজন ধুনীয়া সুঠাম ল'ৰা মোৰ ওচৰত বহিল ।হাতত এটা সৰু বেগ । আকাশীনীলা ৰঙৰ চোলা পিন্ধিছিল । মই তাক সিমান গুৰুত্ব দিয়া নাছিলোঁ। সময়ত ট্ৰেইন আহিল । নির্দিষ্ট দৰাত উঠি মোৰ নিজৰ টিকট নম্বৰ বিচাৰি আসনত বহিলোঁ। অন্য যাত্ৰীৰ স'তে সেই ল'ৰা জনো উঠিল আৰু মোৰ ওচৰতে বহিল । সিও কইম্বাটুৰলৈকে যাম বুলি জনালে । মনতো ভালেই লাগিছিল, তথাপিও কথাটো বিশ্ৱাস কৰা নাছিলোঁ কাৰণ মনত এটা ভাব্ আছিল যে তৎক্ষণাৎ কাকো বিশ্ৱাসত ল'ব নালাগে । কথা বতৰা আৰম্ভ হ'ল । সি মোক জনালে যে তাৰ আসন সংৰক্ষণ কৰি থোৱা নাই, গতিকে তাক মই সহায় কৰিব লাগিব অর্থাৎ,ৰাতি মই তাক মোৰ লগত থাকিবলৈ দিব লাগিব । অৱশ্যে সি টি.টি. ক লগ কৰিবলৈ যাম বুলি জনালে । অলপ সময়ৰ পাছত তাৰ বেগটো মোৰ ওচৰত থৈ সি টি.টি. ক বিচাৰি গ'ল । মই একো উত্তৰ দিয়া নাছিলোঁ। সময় বাগৰিল, বহুসময় নহাত মোৰ সন্দেহ বাঢ়িল। ওচৰত থকা মানুহক কথাটো ব্যক্ত কৰিম নে নকৰিম ভাবিলোঁ, কাৰণ তেতিয়ালৈকে অন্য কাৰো সতে মোৰ চিনাকী হোৱা নাছিল। মোৰ মনত আৰু বেয়া ভাব্ আহিবলৈ ধৰিলে। প্ৰায় চাৰি-পাঁচ ঘন্টা মানৰ পাছত সি আহিল। মনতে ভাবিলোঁ - ৰক্ষা, মনৰ চাপ অলপ কমিল। সি ৰিজাৰভেচন অন্য এটা দৰাত পালোঁ বুলি জনালে । তথাপিও সি বহু সময় মোৰ ওচৰতে বহি থাকিল । আমাৰ মাজত ঘনিষ্ঠতা বাঢ়িল । তাৰ ঘৰ মণিপুৰত আছিল । সি গাড়ীৰ চালকৰ কাম কৰে, সি তাৰ পৰা গাড়ী আনিবলৈ গৈছিল । মোৰ কথা জানি তাৰ চাগৈ মোৰ প্ৰতি

পুতৌ জন্মিছিল । ৰাতি সি নিজৰ দবাতে থাকিল। দিনৰ ভাগত সি মোৰ ওচৰতে বহি থাকিল বিভিন্ন ধৰণৰ কথা পাতি । তাক মই যি ধৰণে ভাবিছিলোঁ সেই ভাৱনা দূৰ হ'ল । কেতিয়াবা মই ৰে'লগাড়ীৰ দুৱাৰ মুখত ঠিয় হ'লে মোক সি ধৰি থাকে । কিজানিবা পৰি যাওঁ । এতিয়াও মোৰ সম্পূৰ্ণকে মনত আছে, মই এদিন দবাত থকা পানীৰে মোৰ মূ�ৰটো ধুই দিছিলোঁ, সি মোক গালি পাৰিছিল কাৰণ পানী লগা জ্বৰ হ'ব পাৰে । বহু বাৰ মোৰ খোৱাৰ টকাও সি দিছিল। যিমানেই দক্ষিণ ভাৰতৰ ওচৰ চাপি গৈছিলোঁ সিমানেই আমাৰ খাদ্যসামগ্ৰী বোৰ সলনি হ'বলৈ ধৰিলে। সি মোক সেই খাদ্য বোৰ খাবলৈ দিয়া নাছিল । ক'ৰবাৰ পৰা সি মোক আমাৰ সতে মিলা খাদ্য আনি দিছিল। প্ৰথম বাৰৰ বাবে হিজৰা দেখা পাইছিলোঁ, সিহঁতৰ বিষয়ে সি মোক বুজাই দিছিল । এনে দৰে আহি আমি নিৰ্দিষ্ট স্থান পালোহি । ৰে'লগাড়ীৰ পৰা নামি সি মোক সেই নিৰ্দিষ্ট কাৰ্য্যালয়ত থৈ আহিম বুলি ক'লে । মই যাব পাৰিম বুলি কোৱাত অট'ৰিক্সা এখন ভাড়া কৰি ক'ত যাব লাগে তামিল ভাষাত বুজাই কলে আৰু লগতে দাম দৰ পাতি মোক বিদায় দিলে । মই তাক সাৱটি ধৰিলোঁ আৰু সিক্ত নয়নে বিদায় দিলোঁ । ভগৱানক ধন্যবাদ দিলোঁ, কাৰণ এনে এজন বন্ধুক লগ পালো যি মোক বাট দেখুৱাই নিৰ্দিষ্ট স্থান পোৱালেহি । এনে এজন বন্ধু আৰু কোনো দিনে লগ নাপাম । আজিৰ দিনত হোৱা হলে মোবাইল নম্বৰটো লৈ থলো হেঁতেন ।

এনে দৰে আহি মই নিৰ্দিষ্ট কাৰ্য্যালয়ত উপস্থিত হলোঁ । আমাৰ অফিচত আগতে কামকৰি যোৱা সিবদাচন নামৰ এজন ব্যক্তিক লগ ধৰিলোঁ ।

তেখেতৰ ঠিকনাটো আমাৰ অফিচৰ পৰা দি পঠাইছিল । দুদিন থাকিলোঁ, সিবদাচনৰ স'তে ফুৰিলোঁ । মোৰ সতে আহিব লগীয়া গাড়ীচালক জনক লগ ধৰিলোঁ, নামটো আছিল গুনোশ্বামী । লগত আৰু এজন আছিল, নামটো পাহৰিলোঁ । যথা সময়ত ট্ৰাক খনত মই যিটো যন্ত্ৰ আনিবলৈ গৈছিলোঁ সেই যন্ত্ৰটো উঠালে । পিচদিনা ৰাতিপুৱা ৮ মান বজাত আমাৰ যাত্ৰা আৰম্ভ হৈ গ'ল ।

(ক্ৰমশ:)

শ্ৰী ভূৱন কছাৰী

গৱেষণা সহায়ক

লাজুকী বান্দৰ (Bengal Slow Loris) - গিবন অভয়াৰণ্যত পোৱা এবিধ বিৰল প্ৰজাতিৰ প্ৰাণী

গিৰিশ গগৈ

গৱেষণা সহায়ক

সাতটা বান্দৰ প্ৰজাতিৰ বাসস্থান গিবন অভয়াৰণ্য। প্ৰধানকৈ হোলোং, নাহৰ, শিঙৰী, চাম কঁঠাল, মৰশাল, আদি গছেৰে পৰিপূৰ্ণ, অসমৰ যোৰহাট জিলা সদৰৰ পৰা প্ৰায় ২৫ কি. মি. দূৰত্বত মৰিয়নী□ৰ সমীপত অৱস্থিত। লাজুকী বান্দৰৰ বাহিৰে বাকী ৬ টা প্ৰজাতি অভয়াৰণ্য খনত পৰ্য্যটকৰ সহজে দৃষ্টিগোচৰ হয়। লাজুকী বান্দৰ এবিধ সৰু আকাৰৰ, লাজুকীয়া, শান্ত প্ৰকৃতিৰ আৰু নিশাচৰ বান্দৰৰ প্ৰজাতি। সেই কাৰণে ইয়াক ঘনজংগলৰ ভিতৰত দিনৰ ভাগত দেখা পোৱা নাযায় । ই গছৰ ডাল-পাতত ৰাতি লাহে লাহে বগাই খোৱা খাদ্যৰ সন্ধানত বিচৰন কৰি ফুৰে কাৰণে ইয়াক ইংৰাজীত Slow loris বুলি কয় । এই প্ৰজাতিৰ বান্দৰ পৃথিৱীৰ কেৱল উওৰ-পূব ভাৰত, বাংলাদেশ, চীন আৰু থাইলেণ্ডত পোৱা যায় । অসমৰ গিবন অভয়াৰণ্যৰ উপৰিও গৰমপানী, কাৰ্বি-আংলং, নামবৰ দৈগ্ৰোং, দিহিং পাটকাই আদি অভয়াৰণ্যত ইয়াক পোৱা যায় । এই প্ৰজাতি বান্দৰৰ বাসস্থান ঘন জংগল সমূহ ক্ৰমান্বয়ে ধংস হৈ অহাৰ বাবে ইয়াৰ সংখ্যাও কমি আহিছে । লাজুকী বান্দৰৰ আকাৰ নেজৰ পৰা মূৰলৈকে ২৬-৩৮ ছে. মি. দীঘল, ওজন ১-২.১ কি. গ্ৰা., চকু কেইটা তেলেকা , কাণ দুখন সৰু আৰু নেজডাল ছুটি | ই ঘন জংগলৰ গছ-গছনি, ফল-মূল, পোক-পতংগ, গছৰ আঠা, শামুক, সৰু জীৱ আদি খাই জীৱন ধাৰণ কৰে। ফলত ই গছৰ বীজ আৰু ফুলৰ ৰেণু বিস্তাৰণত সহায়ক হয়। গিবনৰ নিচিনাকৈ লাজুকী বান্দৰেও এটা সৰু পৰিয়াল কৰি বাস কৰে ।লাজুকী বান্দৰে এবছৰৰ পৰা ডেৰ বছৰৰ ভিতৰত কেৱল এটা পোৱালি জন্ম দিয়ে । ।প্ৰথম তিনি মাহ মাকে পোৱালিটো লগত লৈ ফুৰে আৰু বিশ মাহত ই যৌৱন প্ৰাপ্ত হয় । লাজুকী বান্দৰৰ জীৱন কাল ২০ বছৰ । আমাৰ ওচৰতে থকা গিবন অভয়াৰণ্যত কেতিয়াবা ৰাতি গ'লে এইবিধ বিৰল প্ৰজাতিৰ বান্দৰ দেখিবলৈ পোৱা যায় ।

কাৰ্বি আংলংৰ নামবৰ দৈগ্ৰোং অভয়াৰণ্যত সমীপৰ এখন গাৱঁত দিনৰ ভাগত এই প্ৰতিস্থানৰ বিজ্ঞানী শ্ৰী হৰি ৰাম বৰাদেৱে তোলা দুখন ফ'টো লগত দিয়া হ'ল ।

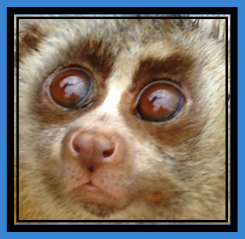

বেলি মাৰ গ'ল

ড° লীলা গগৈ সুৰচিত গন্থ 'বেলি মাৰ গ'ল গ্রন্থখনি যিসকল সুহৃদ পঢ়ুৱৈয়ে পঢ়িছে, তেওঁলোকে সকলোৱে হয়তো অপ্রিয় হলেও এটা বাস্তৱ সত্যক অস্বীকাৰ নকৰিব যে, অসমত আহোম শাসনৰ সমাপ্তিৰ লগে লগেই অসমৰ বেলি মাৰ গৈছিল। সাহিত্য, ক'লা, সংগীত আদি সকলো ক্ষেত্রতে অসমৰ আকাশ, বতাহ স্থবিৰ হৈ পৰিছিল, অসমৰ ক'লা-সংস্কৃতিৰ পথাৰখনত খৰাং মাৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিছিল, অসমীয়া জাতিয়ে বিশ্ব দৰবাৰত নিজক প্রতিষ্ঠা কৰিবলৈ প্রায় অপাৰগ হৈ পৰিছিল।

ঠিক তেনে এক কুটিল সন্ধিক্ষণতেই অসমৰ মাৰ যোৱা বেলি পুনৰুদ্ধাৰৰ বাবে আন্দোলন আৰম্ভ হয় তেতিয়াৰ কলিকতাত অধ্যয়নৰত অসমীয়া ছাত্রৰ উদ্যোগত। আন্দোলনৰ প্রথম ফলাফল – "অসমীয়া ভাষা উন্নতি সাধিনী সভা"। এইখিনি সময়ক অসমীয়া ভাষা সাহিত্যৰ নৱজাগৰণ (Renaissance) বুলি অভিহিত কৰিব পাৰি। দ্বিতীয় ফলাফল- লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা, চন্দ্রকুমাৰ আগৰৱালা আৰু হেমচন্দ্র গোস্বামীৰ আশাশুধীয়া প্রচেষ্টাত জন্মলাভ কৰা "জোনাকী"। "জোনাকী" ৰ জৰিয়তেই অসমীয়া সাহিত্যত গৌৰৱময় "জোনাকী" যুগৰ সৃষ্টি। তৃতীয়তে উনুকিয়াব পাৰি বেজবৰুৱাদেৱৰ যুগস্রষ্টা আলোচনী "বাঁহী"লৈ। তাৰ পিছতেই নাম ল'ব লাগিব লক্ষীপুৰৰ জমিদাৰ গল্প সাহিত্যিক নগেন্দ্র নাৰায়ণ চৌধুৰী দ্বাৰা প্রতিষ্ঠিত আৰু পিছলৈ দীননাথ শর্মাৰ সম্পাদনাত অতি সৰবৰহী মাহেকীয়া "আৱাহন" আলোচনীখনেও এই সময়তে ঘন কুঁৱলীৰ এন্ধাৰ ফালি অসমীয়া সাহিত্যলৈ পোহৰ নমাই আনিছিল। ইয়াৰ পাছতেই ১৯৬০ চনত প্রাণ পাই উঠা ভাষা আন্দোলনেও অসমীয়া ভাষাৰ শিপাডালক ধৰি ৰাখিবলৈ অহোপুৰুষার্থ কৰিছিল।

সময়ৰ সুঁতিত বহুতো মুধা ফুটা সাহিত্যিকে অসমীয়া সাহিত্যৰ ভঁৰাল চহকী কৰি থৈ গৈছে । জ্যোতিপ্রসাদৰ জ্যোতিয়ে, বিষ্ণুৰাভাৰ আভাই আৰু ভূপেন মামাৰ ভূপালী পৰশে অসমীয়া সংস্কৃতিৰ পথাৰখন চহকী কৰাত যেন সোণত সুৱগাহে চৰালে। অসমীয়া ভাষা সাহিত্য, কলা সংস্কৃতিৰ পথাৰখনত কাম কৰা, গাত ৰ'দ নলগা আৰু বৰষুণ নপৰা সকলো খেতিয়কলৈ "লাল চালাম"। অসমীয়া জাতি চিৰদিন তেঁওলোকৰ ওচৰত ঋণী হৈ ৰ'ব।কিন্তু দুখৰ বিষয়: অসমৰ বেলি মাৰ যোৱাৰ পথত....। জাতিটোৰ বাবে এয়া ঘোৰ সংকটৰ কাল।

প্রতিটো প্রহৰ, প্রতিটো সময়
প্রতিটো পলে চিঞৰে আজি;
প্রতিটো ফাগুণ, প্রতিটো ব'হাগ
প্রতিটো আশাৰ সমাধি আজি"।

জ্যোতিপ্রসাদে কোৱাৰ দৰেই ভাষাৰ পৰা সাহিত্যলৈ, ক'লাৰ পৰা সংগীতলৈ সকলোতে ঘূণে ধৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিছে ব্যাপক ৰূপত । বিশ্বজুৰি আধিপত্যকামী সংস্কৃতিসমূহৰ যি আগ্রাসন চলিছে, সেই আগ্রাসনৰ কোবাল সোঁতত আমাৰ জাতিটোৰ ডিঙাখনে থাউনি নোপোৱা হৈ পৰিছে। বিশ্বায়নৰ নাম লৈ একলা-দুকলাকৈ বাঢ়ি অহা সাংস্কৃতিক সম্প্রসাৰণবাদৰ ৰঘুমলাই আৱৰি ধৰিছেহি আমাৰ জাতীয় জীৱন। আমি আমাৰ শিপা হেৰুৱাই পেলাইছোঁ। আমাৰ বুলিবলৈ থকা সকলো ঐতিহ্যৰ পৰা ক্রমাৎ আমি আতৰি আহিছোঁ। কিন্তু কাইলৈ পৃথিৱীৰ সবাহলৈ আমি নিজৰ বুলি ক'বলৈ কি লৈ যাম? নিজকে অসমীয়া বুলি ক'বলৈ কি থাকিব আমাৰ?

যি নিজক চিনি নাপায়, সি কেনেকৈ বুজি উঠিব পৃথিৱীৰ অনুভূতি? যি নিজৰ ভাষাটোকেই ভালদৰে বুজি নাপায় সি কেনেকৈ বুজিব মানুহৰ দুখ আৰু যন্ত্রণাৰ কথা?মানুহ হবলৈ হ'লে আমি আমাৰ মাতৃভাষাক সন্মান কৰিব লাগিব।

মহাসাগৰত মিলি যাবলৈ হ'লে প্ৰথমে নৈ হৈ চুই যাব লাগিব আইৰ আঁচল। নহ'লে ঘনচিৰিকাই ৰাজহাঁহৰ খোজ ল'বলৈ গৈ নিজৰ খোজ পাহৰাৰ দৰে গতি হ'ব আমাৰ।

আমি দেখিছোঁ যে দিনত সভাই-সমিতিয়ে দেশ জাতিৰ বৰ বৰ কথা কৈ সন্ধিয়া আলহীৰ আগত "মোৰ ল'ৰাটোৱে অসমীয়া ক'বই নাজানে" বুলি গৌৰৱ কৰা মানুহৰ ভণ্ডামি। আমি দেখিছোঁ মাতৃভাষাৰ বাবে আন্দোলন কৰা বিয়াগোম মানুহৰ সন্তানে কেনেদৰে আচ্ছন্ন হৈ থাকে পশ্চিমীয়া বিলাসৰ জাকজমকতাৰ মাজত। কিন্তু আচলতে আমি ফাঁকি দি আছোঁ কাক? আমি কাৰ পৰা পলাই ফুৰিছো? ক'লৈ গৈ আছোঁ আমি? কি বিচাৰিছোঁ? কাৰ বাবে? কিহৰ বাবে? 'জ্যোতিপ্ৰসাদ – বিষ্ণুৰাভাক' চিনি নাপাওঁ বুলি কোৱা আমাৰ নতুন প্ৰজন্মৰ পৰা আমি কি আশা কৰা উচিত? কি কৰা উচিত যেতিয়া শতাংশ নম্বৰৰ খেলখনত জয়ী হৈ অহা কোনো মানৱ সম্পদে অসমৰ জাতীয় সংগীতটোনো কি নাজানে? হাইস্কুল শিক্ষান্ত পৰীক্ষাত স্থান লাভ কৰা কোনো মানৱ সম্পদে নাজানে সুগন্ধি পখিলাৰ কবি কোন? কলংপৰীয়া কবি কোন? কি কৰা উচিত যেতিয়া কোনো উন্নাসিক অভিভাৱকে আহি কয়হি; আমাৰ ছোৱালীজনীয়ে অসমীয়া ক'বহে নোৱাৰে, কিন্তু যোৱাবাৰ ফাইনেলত তাই এছামিজত নাইনটি ফ'ৰ স্কৰ কৰিছিল।

আমি কোনো উগ্ৰ জাতীয়তাবাদী নহয়। আমি বিশ্বাস নকৰোঁ হিটলাৰৰ জাতীয়তাবাদত। আমি ভিন্ন সংস্কৃতিৰ সংমিশ্ৰণক শ্ৰদ্ধা কৰোঁ। কিন্তু আমি এইটোও বিস্বাস কৰোঁ যে শিপা অবিহনে কোনেও একো কৰিবই নোৱাৰে। শিপাই শেষ কথা। আমি গোড়া নহয়; কিন্তু আমি নিজৰ এটা পৰিচয় বজাই ৰখাত আগ্ৰহী। আমি সংকীৰ্ণ নহয়, কিন্তু নিজৰ কৃষ্টি-সংস্কৃতিৰ পোহৰেৰে নিজকে পোহৰাই তোলা, নিজৰ ইতিহাসৰ পাঠ পঢ়ি গৌৰৱান্বিত হ'বলৈ আমি ইচ্ছুক।

আহক, হে প্ৰিয় সুহৃদ, আজিৰ পৰাই আমি নিজক বিচাৰি আৰম্ভ কৰোঁ এক নতুন যাত্ৰা। মম-ডেড, আংকল-আণ্টীৰ পৃথিৱীৰ পৰা উভটি যাওঁ মাঁ-দেউতা, খুৰা-খুৰী, মামা-মামী অথবা তাৰৈ আৰু আমৈৰ মাজলৈ। আহক, আমাৰ শেঁতা পৰা আইৰ মুখত অলপ পোহৰ সানি দিবলৈ চেষ্টা কৰোঁ। আইৰ মুখৰ মাতটোকেই ওঁঠত বান্ধি আগুৱান হওঁ পৃথিৱীৰ বহ'ল বুকুলৈ।

হেঃ হেঃ হেঃ, মিছা ক'লে কি হ'ব?
That is also a important matter যে
নৈৰ সমান ব'ব কোন?
আইৰ সমান হ'ব কোন?

শ্ৰী অসীম চেতিয়া
গ্ৰন্থাগাৰ তথ্য সহায়ক

বিশেষভাৱে সক্ষম শিশুসকলৰ প্ৰতি সমাজৰ দায়িত্ব

সমাজৰ একোজন দায়িত্বশীল ব্যক্তি হিচাবে বিশেষভাৱে সক্ষম শিশুসকললনো কোন আমি জনাটো অতি আৱশ্যক। 'বাধাগ্ৰস্ততা' হ'ল এনে এটা অৱস্থা, যিয়ে সাধাৰণতে, অন্য অধিকাংশ লোকে কৰিব পৰা কামৰ সামৰ্থ্যক সীমিত কৰে। উদাহৰণস্বৰূপে, এটা স্বাভাৱিক শিশুৱে কৰিব পৰা কাম এটা যদি একে বয়সৰ আন এটা শিশুৱে কৰিব নোৱাৰে, তেতিয়া সেই শিশুটোক আমি 'বাধাগ্ৰস্ত শিশু' বা যাক বৰ্তমান আমি 'বিশেষভাৱে সক্ষম' শিশু বুলি কওঁ। কিন্তু এটা কথা সদায় আমি মনত ৰখা উচিত যে এটি শিশুৰ শাৰীৰিক সমস্যাটোৱে যেতিয়ালৈকে শিক্ষাগতভাৱে, সামাজিক-ভাৱে, বৃত্তিমূলকভাৱে বা আন যিকোনো ক্ষেত্ৰত অসুবিধাৰ সৃষ্টি নকৰে তেতিয়ালৈকে এজন অক্ষম শিশুকো আমি বাধাগ্ৰস্ত বা বিশেষভাৱে সক্ষম বুলি কব নোৱাৰোঁ।

বাধাগ্ৰস্ততাৰ ক্ষেত্ৰত প্ৰধানকৈ তিনিটা পৰ্যায় পোৱা যায়। সেইকেইটা হ'ল – অংগখুঁত্(Impairment), অক্ষমতা (Disability) আৰু প্ৰতিবন্ধকতা (Handicap)। 'অংগখুঁত্' মানে হ'লে এটা শিশুৰ শাৰীৰিক বা মানসিক ক্ষতি বা অস্বাভাৱিক শাৰীৰিক গঠন যিটো তেওঁৰ কাম-কাজত পৰিলক্ষিত হয়। আনহাতে অংগক্ষতৰ ফলত এটা শিশুৰ সাধাৰণ কাম-কাজত যিখিনি সমস্যাৰ সৃষ্টি হয় আৰু সেই সমস্যাই যিখিনি সীমাবদ্ধতা আনি দিয়ে তাকে অক্ষমতা বোলা হয়। প্ৰতিবন্ধকতা মানে, আনহাতে, শিশু এটাই অংগক্ষত বা অক্ষমতাৰ বাবে সাধাৰণ জীৱন-যাপনত সামাজিক ভাৱে যিখিনি সমস্যাৰ সম্মুখীন হয়।

এটা শিশুৰ বাধাগ্ৰস্ততা চিনাক্ত হোৱাৰ পাছত পিতৃ-মাতৃ, পৰিয়াল আৰু সমাজে ইতিবাচক মনোভাৱ লৈ তেওঁক সহযোগ কৰিব লাগিব আৰু লগে লগে প্ৰতিকাৰমূলক ব্যৱস্থাসমূহ গ্ৰহণ কৰিব লাগিব। পিতৃ-মাতৃয়ে তেওঁলোকৰ এনে সন্তানক এটা সমস্যা বুলি ভাৱি নাথাকি তেওঁলোকক প্ৰাথমিক শিক্ষা দিয়াটো প্ৰথম আৰু প্ৰধান কৰ্তব্য বুলি ভাবিব লাগিব। প্ৰাথমিক শিক্ষা যিহেতু সকলো শিশুৰে মৌলিক অধিকাৰ, তেনেক্ষেত্ৰত বিশেষভাৱে সক্ষম শিশুসকলেও অন্য সাধাৰণ শিশুৰ দৰেই শিক্ষা গ্ৰহণ কৰিবলৈ পোৱাটো তেওঁলোকৰ মৌলিক অধিকাৰ। বাধাগ্ৰস্ততাৰ ধৰণ, মাত্ৰা বা তেনে শিশুৰ বয়স ইত্যাদি বিবেচনা কৰি তেওঁলোকৰ বাবে উপযুক্ত শিক্ষা ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰিব লাগিব। এনে শিক্ষা ব্যৱস্থা সাধাৰণতে তিনি ধৰণৰ হয় –

সাধাৰণ শিক্ষা ব্যৱস্থা (Normal Education): য'ত কেৱল সাধাৰণ শিশুসকলৰ লগতে বিশেষভাৱে সক্ষম শিশুসকলকো শিক্ষা প্ৰদান কৰা হয় যদিও এনে শিক্ষাব্যৱস্থাত তেওঁলোকৰ বাবে কোনো বিশেষ ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰা নহয়।

বিশেষ শিক্ষা ব্যৱস্থা (Special Education): এনে শিক্ষাব্যৱস্থাত কেৱল বিশেষভাৱে সক্ষম শিশুসকলকহে শিক্ষাদান কৰা হয়। এই শিক্ষা ব্যৱস্থাত বেলেগ বেলেগ ধৰণৰ বাধাগ্ৰস্ততাৰ বাবে বেলেগ বেলেগ শিক্ষাৰ ব্যৱস্থা কৰা হয়। উদাহৰণস্বৰূপে, এজন দৃষ্টি বাধাগ্ৰস্ত শিশুৰ বাবে যি শিক্ষাব্যৱস্থা সেইটো মানসিকভাৱে বাধাগ্ৰস্ত শিশু এজনৰ বাবে কেতিয়াও একে নহয়।

সমন্বিত শিক্ষা ব্যৱস্থা (Inclusive Education): এই শিক্ষাব্যৱস্থাৰ মূল কথাটো হ'ল প্ৰতিজন বিশেষভাৱে সক্ষম শিশুকে তেওঁৰ ক্ষমতা, অক্ষমতা, চাহিদা অনুযায়ী পূৰ্ণ সুযোগ দিয়াৰ লগতে যিমান বেছি তথা যিমান সোনকালে সম্ভৱ সাধাৰণ বিদ্যালয়ত অন্যান্য সাধাৰণ শিশুসকলৰ লগত শিক্ষাগ্ৰহণৰ, সামাজিক যোগাযোগ গঢ়ি তোলাৰ আৰু তেওঁলোকৰ লগত মিলি যোৱাৰ সুযোগ প্ৰদান কৰা।

অসম সৰ্বশিক্ষা অভিযান মিছন' আৰু 'ৰাষ্ট্ৰীয় মাধ্যমিক শিক্ষা অভিযান মিছনে' ও 'সকলোৰে বাবে শিক্ষা' এই মূলমন্ত্ৰৰ আধাৰত বিশেষভাৱে সক্ষম শিশুসকলৰ সমন্বিত শিক্ষাৰ ওপৰত অধিক গুৰুত্ব প্ৰদান কৰিছে। ইয়াৰবাবে তেওঁলোকে শিক্ষক প্ৰশিক্ষণ,

বিদ্যালয়সমূহত বিশেষ শিক্ষকৰ নিযুক্তি আৰু সমল কোঠাৰ (Resource room) প্ৰস্তুতি, সহায়ক সঁজুলিৰ যোগানকে ধৰি বিদ্যালয় আন্তঃগাঁথনিৰ পৰিবৰ্তনৰ ওপৰতো গুৰুত্ব আৰোপ কৰিছে।

বিশেষভাৱে সক্ষম শিশুসকলৰ সমন্বিত শিক্ষাৰ সফল আৰু ফলপ্ৰসু ৰূপায়ণৰ ক্ষেত্ৰত শিক্ষক-শিক্ষয়িত্ৰী, পিতৃ-মাতৃৰ লগতে সমাজৰ প্ৰতিজন সচেতন নাগৰিকৰে ভূমিকা আৰু দায়িত্ব অতিশয় গুৰুত্বপূৰ্ণ। এই শিক্ষাব্যৱস্থাৰ ফলত সমাজে যেনেকৈ এনে শিশুৰ সমস্যা আৰু সীমাৱদ্ধতাখিনি সহজভাৱে তথা সহৃদয়তাৰে বিবেচনা কৰিবলৈ শিকিব, ঠিক তেনেকৈ সেই শিশুসকলেও নিজকে কোনো বিচ্ছিন্ন সমাজৰ বাসিন্দা বুলি নাভাৰি সমাজৰেই এজন বুলি ভাবিবলৈ শিকিব।

আধুনিক যুগতো বিশেষভাৱে সক্ষম শিশুসকলৰ সম্পৰ্কে মানুহৰ সুস্থ ধাৰণাৰ অভাৱ। বিশেষভাৱে সক্ষম শিশু বা ব্যক্তি সকলৰ পুনৰ্বাসনৰ (Rehabilitation) বাবে এটি অন্যতম পৰ্যায় হ'ল জনসাধাৰণক সচেতন কৰা। আমি সকলোৱে সদায় কিছুমান কথা জনা আৰু মনত ৰখা উচিত যে – যিকোনো এজন 'সক্ষম' লোক জীৱনৰ যিকোনো মুহূৰ্তত অক্ষম হৈ যাব পাৰে। অক্ষমতা কোনো ৰোগ, সোঁচৰা বেমাৰ অথবা বংশানুক্ৰমিক ৰোগ নহয়। ভাৰতৰ বৰ্তমানৰ প্ৰধানমন্ত্ৰীয়েও বিশেষভাৱে সক্ষম লোকসকলৰ সম্পৰ্কে যথেষ্ট সজাগতাৰ সৃষ্টি কৰাৰ লগতে তেওঁ জনসাধাৰণক 'বিকলাংগ' শব্দৰ সলনি 'দিব্যাংগ' শব্দটো ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ আহ্বান জনাইছে। কাৰণ তেওঁৰ মতে এনে লোকসকলে সদায় সকলো কথা দিব্য দৃষ্টিৰে অনুধাৱন কৰিবলৈ চেষ্টা কৰে। আমি সদায় মনত ৰখা উচিত যে বিশেষভাৱে সক্ষম এটি শিশু বা এজন ব্যক্তি প্ৰথমে এজন 'মানুহ', তাৰপাছতহে তেওঁ 'অক্ষম'।

শ্ৰীমতী দিপ্তী বৰা কলিতা
শিক্ষয়িত্ৰী
কাক'জান উচ্চতৰ
মাধ্যমিক বালক বিদ্যালয়,
যোৰহাট

প্রাচীন গ্রীক সভ্যতাৰ এক সুন্দৰ নিদৰ্শন - এক্ৰ'পলিচ ৰ পাৰ্থেনন

বিশ্বৰ পৌৰাণিক সভ্যতাৰ ভিতৰত গ্ৰীক সভ্যতা অন্যতম। গ্ৰীক সকলে উপাসনা কৰা প্ৰধান দেৱী এগৰাকী আছিল 'এথিনা' । তেওঁ যুদ্ধ আৰু জ্ঞানৰ দেৱী ৰূপে পূজনীয় আছিল আৰু এথেন্সৰ পেট্ৰন দেৱী হিচাপে বিখ্যাত আছিল। তেওঁৰ সন্মানার্থে গ্ৰীচৰ ৰাজধানী এথেন্সৰ এক্ৰ'পলিচ পাহাৰৰ ওপৰত ৪৩২ খ্ৰী:ত পাৰ্থেনন নামৰ এই মন্দিৰটো নিৰ্মাণ কৰা হৈছিল। তাৰ প্ৰধান ৰাজমিস্ত্ৰী আছিল ইকটিনচ আৰু কেল্লিক্ৰেট ।মন্দিৰটো তিনিটা বগা মাৰ্বলৰ ভেটিৰ ওপৰত বনোৱা হৈছিল। মন্দিৰটো বহিৰৰ ফালে ৪৬ টা আৰু ভিতৰৰ ফালে ২৩ টা বগা মাৰ্বলৰ স্তম্ভৰে আৱৰি আছিল আৰু পূব আৰু পশ্চিম দিশত দুটা তিনিকোণীয়া ফুলাম গাঁথনি আছিল। ইয়াৰে পূৱৰ গাঁথনিত 'এথিনাৰ' জন্ম কাহিনীৰ বিষয়ে লিপিবদ্ধ কৰা আছিল।

মন্দিৰটোৰ ভিতৰত ১১.৫ মিটাৰ উচ্চতাৰ এথিনা পাৰ্থেনচ নামৰ হাতীদাঁত আৰু সোণেৰে নিৰ্মিত এটি এথিনাৰ মূৰ্ত্তি স্থাপন কৰা হৈছিল। এই মূৰ্ত্তিটো ফেইদিয়াচ্ নামৰ এজন শিল্পীয়ে নিৰ্মাণ কৰিছিল। এক্ৰ'পলিচ পাহাৰৰ ওপৰত থকা পাৰ্থেননক এথিনা পাৰ্থেনচৰ নিজা ঘৰ হিচাপে জনাজাত । তিনি শতিকাৰ মধ্যভাগত এটা অগ্নিকাণ্ডত এই মন্দিৰৰ কিছু ক্ষতি সাধন হয়। তাৰপাছত ইয়াক একাদিক্ৰমে এক গীৰ্জালৈ আৰু মচ্জিদলৈ পৰিবৰ্তিত কৰা হৈছিল। ৰোমান সকলৰ আক্ৰমণৰ পাছৰে পৰা এথিনা পাৰ্থেনচৰ মূৰ্ত্তিটো ধ্বংস হোৱা বুলি এটি ধাৰণ আছে। সৰ্বশেষত ১৬৮৩ চনৰ পৰা ১৬৯৯ চনলৈ চলা বিখ্যাত তাৰ্কিচ যুদ্ধৰ পৰিণামত এই মন্দিৰটো ধ্বংসপ্ৰাপ্ত হয়।

যোৱা মে' মাহত গ্ৰীচ ভ্ৰমণৰ সময়ত এক্ৰ'পলিচৰ পাৰ্থেনন দৰ্শন কৰাৰ মোৰ সৌভাগ্য হৈছিল। শতিকা পুৰণি এই স্থাপত্য কলা আৰু সংৰক্ষণৰ ছবি মোৰ মনত আজিও সজীৱ হৈ আছে।

আদ্রিজা বৰুৱা

দশম শ্ৰেণী
ডন বস্ক' উচ্চতৰ মাধ্যমিক বিদ্যালয়
বাঘচুং, যোৰহাট

কবিতা

গীটাৰ

শুই থকা গীটাৰ এখনৰ বুকুৰে
হৃদয় এখন খোজ কাঢ়ি যায়
হেঁপাহৰ ডেওকাবোৰে
বতাহ কঁপাই
বিজুলী মাতে

গীটাৰ খন শুই থাকিলে
শীতৰ সন্ধ্যা এটাই উচুপে
নদী এখন গুণ গুণাই
আগুৱাই যায়

শুই থকা গীটাৰ খনৰ বুকুত
লাৱন্যময়ী তুলিকাৰে
চিত্রলেখাই মাতি আনে
উষাৰ অনিৰূদ্ধক

শুই থকা গীটাৰ তাঁৰবোৰত
ক্রন্দনৰত উন্মাদ অতিথিয়ে আলিঙ্গন কৰে
সূর্য্য এটা আগুৱাই জায় ।

ড° দণ্ডেশ্বৰ দত্ত
ৱৈজ্ঞানিক-খ

পখী

অ' পখী, আজি আকৌ আহিবিনে আবেলি মোৰ বাটেদি?
হ'ব নে কথা জাঁজীপৰীয়া বালিচ'ৰত আকৌ আজি?
তই আহিবি, অকলেই আহিবি ।
মই তোৰ বাবে শিমলুৰ সুঘ্রাণ লৈ যাম, আৰু তই সুবাস বুটলিবি...
মনত আছে নে পখী,
আমাৰ প্রথম মিলনৰ কথা?
তই যে বৰ ধুনীয়াকৈ কাচিঁয়লি ৰ'দৰ ফালে পিঠি দি বহি আছিলি,
আৰু মই তোৰ ৰূপৰ বর্ণনা দি,
তোক যে কবিতা শুনাইছিলো ?
মনত আছেনে তোৰ ?
তই আহিবি, ঘৰমুৱা পক্ষীজাকক এৰি থৈ
মোৰ স'তে জীপাল সন্ধ্যাটোৰ সতে কথা হ'বলৈ
মই বাট চাই ৰ'ম নঙলা মুখত
ভাবি থৈছোঁ
তই আহিলে এইবাৰ তোক এপাহ কপৌ দিম
আমাৰ বাৰীৰ ঢাপত ফুলা
পখী অ' আহিবি তই ।

পৰী দাস
শ্রেণী: একাদশ

কবিতা

স্বচ্ছতা

হে চিৰসেউজ, মহান দেশৰ অধিবাসী সকল
আহা আগবাঢ়ি সকলো মিলি
গঢ়ো এখন নিকা ভাৰত ভূমি
ভাবি লোৱা এটি কথা মনে প্ৰাণে
কৰিম আমি ঘৰখন নিকা প্ৰথমে ।
দূৰ কৰা জাৰৰৰ দ'ম, চাফা কৰা নলা-নৰ্দমা
তেতিয়াহে পৰিত্ৰাণ পাবা বেমাৰৰ পৰা
কৰা পণ নাজাওঁ হাৰি জংঘললৈ
ঘৰতে বনাম শৌচালয়
কৰিম ৰোগমুক্ত,গঢ়িম নিকা আলয়।

কয় সকলোৱে পানীয়েই প্ৰাণ
পানীৰ অবিহনে যায় জীৰৰ প্ৰাণ
খোৱাপানীৰ লবা যতন
নদীৰ পানী নকৰিবা সেৱন।
জন্তুৰ মল মূত্ৰ দূৰত ৰাখিবা
পুখুৰীৰ চাৰিও ফালে বেৰা দিবা
চুণ দিবা ব্লিছিং দিবা
নিৰ্মল পানী খাবলৈ পাবা।।
গতিকে সকলো

নেন্সী বৰা
শ্ৰেণী: একাদশ
লুইত ভেলী একাডেমী, যোৰহাট
কন্যা: শ্ৰী চন্দন বৰা, কাৰিকৰী সহায়ক

অনুভৱ

আজি মোৰ বহুতেই পলম হ'ল
মেজ খনত পৰি থকা
কাগজ, কলম তুলি লৈ
লিখিবলৈ লওঁতেই;

প্ৰকৃতিৰ মাজত
দুলি থকা শীতল বতাহজাকে,
মোক চুই গ'ল:
কিন্তু; কি আচৰিত
মই অনুভৱেই কৰিব নোৱাৰিলোঁ।
বতাহজাকে যে মোক কাণে কাণে কিবা এটা
কৈ গ'ল;
নুশুনিলোঁ; বুজিও নাপালোঁ।

কিন্তু আজি মই এৰি দিলোঁ,
সেই কাগজ আৰু কলমটো
কি নো কৈ গ'ল বতাহজাকে?
মই বিচাৰোঁ; আকৌ যেন:
শীতল বতাহজাক ঘূৰি আহক;
মোৰ বাবে মাথো..... মোৰ বাবে.....

মেৰী কুইন মহন্ত
চিনামৰা জাতীয় বিদ্যালয়
কন্যা: শ্ৰী নিত্যানন্দ মহন্ত, গৱেষণা সহায়ক

কবিতা

অর্থনৈতিক ধামখুমীয়াত
তেজ বেচি বেচি
জীয়াই আছোঁ মোৰ পৰিয়াল
আৰু জীৱন সঙ্গীৱনী ৰিক্সাখন।
ৰিক্সাখন নচলিলে
আমৰ আখলত জুই নজ্বলে।
সেই বাবেই জুই সৰা
ৰ'দতেই হওক বা
দোকোল-টকা বৰষুণতেই
দুজন ভদ্রলোকক
বোকোচাত তুলি
কোনো আমনি নকৰাকৈ
ঘূৰি থাকে মোৰ ৰিক্সাৰ চকা।
পেডেলত ঢালি দি
দেহৰ আটাইখিনি বল
লৈ যাওঁ আগন্তুকক
লক্ষ্য স্থানলৈ
ওখোৰা-মোখোৰা বাটত
মোৰ উশাহবোৰ ঘন হয়
শৰীৰৰ ঘাঁমে ধুই নিয়ে
মোৰ টাপলি মৰা পেণ্ট।
মোৰ পাওনা পইচা কেইটাৰ বাবে
কোনো জনে দৰ দাম কৰে
কোনো জনে সমভাগী হৈ
নোসোধাকৈয়ে দি যায়
পকেটৰ পাৰ্চটো খুলি,
কাৰোবাৰ উপসাহ
কাৰোবাৰ পুতো
কাৰোবাৰ হুমুনিয়াহ

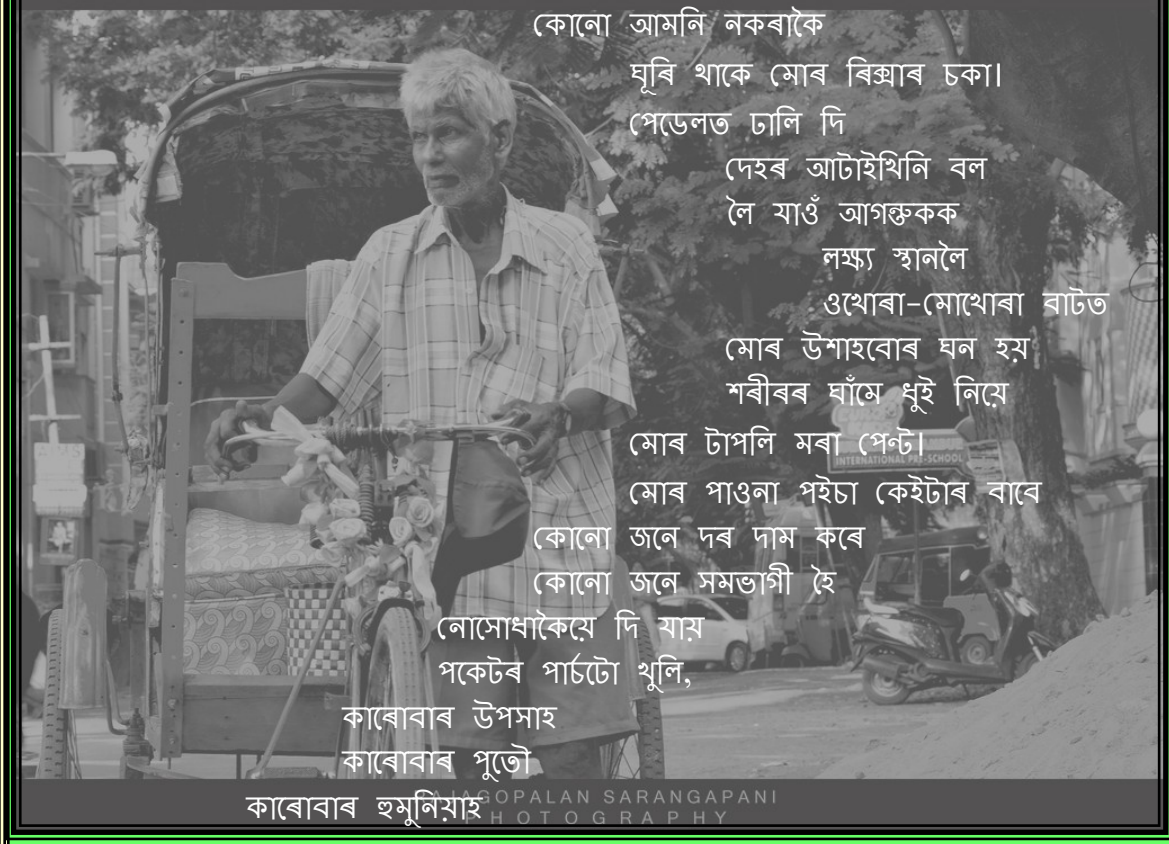

মোৰ জীৱনৰ মুদ্রা;
তাকে লৈ চলাই আছো
দৈনন্দিন বাটত মোৰ ৰিক্সা,
মোক আৰু পৰিয়ালটো
জীয়াই ৰখাৰ মায়াত.....

ৰিক্সাৱালা

শ্রী মন্টু কুমাৰ বৰুৱা
অধ্যক্ষ:
টীয়ক ৰজাবাৰী উচ্চতৰ মাধ্যমিক বিদ্যালয়

বৰ্ষা অৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠানৰ অৰ্কিডেৰিয়ামত সংৰক্ষিত কেইবিধমান

ডেন্দ্রবিয়াম এফাইলাম Dendrobium aphyllum

ডেন্দ্রবিয়াম নবাইলি Dendrobium nobile

ডেন্দ্রবিয়াম মচকেটাম Dendrobium moschatum.

ডেন্দ্রবিয়াম গিবচনাই .Dendrobium gibsonii

ডেন্দ্রবিয়াম ফিমব্রিয়েটাম ভেৰাইটি অকুলেটাম

Dendrobium fimbriatum var. oculatum

ডেন্দ্রবিয়াম লিটুইফ্লৰাম Dendrobium lituiflorum

আলোক চিত্ৰ
ড° কুন্তলা নেওগ বৰুৱা